॥ अथ ॥

॥ श्री ॥ ...ोज

॥ जिनहर्षसूरि विरचित ॥

॥ रात्रिभोजनपरिहारक रास ॥

॥ आ ग्रंथने ॥

॥ रात्रिभोजनना परिहारथी ज... ...मूके न

थयेला शुभफलने दर्शाव

नारो जाणीने ॥

॥ सुदृष्टिजनोने रात्रिभोजननिषेध निमित्तें दृष्टां

तरूपें ज्ञान आपनारो समजीने तेनी ॥

॥ द्वितीयावृत्तिने ॥

शा० भीमसिंह माणकें.

॥ श्री मुंबईमां ॥

॥ निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित करावी छे.

संवत् १९५२. सन १८९५.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ ॥

॥ श्री जिनहर्षसूरिकृत रात्रिभोज नो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीशंखेश्वर पास प्रभु, महिमा त्रीजग वा[illegible] खं यक्ष जेहनो जागतो, पूरे वांछित आश ॥ [illegible]जी, मूके न मूर्त्ति जेहनी, तुरत जणावे देह ॥ वारे चंद्र [illegible], बिंब भराव्युं एह ॥ २ ॥ पूजी केता काललगें, भुवनपति धरणेंद्र ॥ अठम करी पदमावती, आराधी गोविंद ॥३ ॥ जरासिंधुयें मूकी जरा, यादव कर्या अचेत ॥ प्रभुपद नमणे सींचीया, हूआ तुरत सचेत ॥४॥ शंखशब्द पूर्यो तदा, हर्ष धरी गोपाल ॥ थाप्यो नयर संखेसरो, थाप्यो पास दयाल ॥ ५ ॥ आवे जग सहु जातरा, परता पूरे तास ॥ कलियुग मांहे कला वधी, सेवे सुर नर जास ॥ ६ ॥ तास चरण प्रणमी करी, हैयडे धरी उल्लास ॥ करुं स्वामी सुपसायथी, रात्रि भोजन रास ॥ ७ ॥ सांभलजो आलस त्यजी, थाशे लाभ अपार ॥ रात्रिभोजन वारजो, सांभली दोष विचार ॥ ८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ जो जो ज्ञानी विचारी खरो, माणस ढोर किशो
...पशु तणी परें वर्त्यों रहे, रात्रि दिवस सर
सहहे ॥ १ ॥ दिवस छोडी जे रातें खाय, राक्षस
सरिखा ते कहेवाय ॥ माणस नहिं पण ते जमदू
... जाणे प्रत्यक्ष दीसे भूत ॥ २ ॥ जे थया पूर्व ऋषी
...राण, तेणे भाख्यां छे शास्त्र पुराण ॥ हैयुं उघाडी
...महोटा दोष कह्या छे जेह ॥ ३ ॥ पवित्र
नही भांखी गोमती, सिंधु सरस्वती साबरमती ॥ गंगा
यमुना गोदावरी, सीता सीतोदा गुण भरी ॥४॥ न
दी नरबदा गया प्रयाग, निर्मल पावन नीर अथाग॥
दिननायक अस्ताचल जाय, रुधिर सरीखुं जल ते था
य ॥ ५ ॥ भारतमांहे कह्युं भगवान, समजो जो हों
य हैयडे शान ॥ रुधिर मांस पाणी ने अन्न, मानो
श्रीमार्कंड वचन्न ॥ ६ ॥ व्रत करे केइ एकादशी, धर्म
कीजें मानव धसमसी ॥ दुःक्कर चांद्रायण तप करे,
अडशठ तीरथ करतो फरे ॥ ७ ॥ एहवा धर्मी रय
णी जमे, तेतो फोकट काया दमे ॥ धर्म कह्यो तेहनो
अप्रमाण, एहवां बोले वचन पुराण ॥ ८ ॥ रातें क
र्यु न कह्युं स्नान, रातें देवुं पण नहीं दान ॥ रातें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पूर्वज न लहे पिंम, रातें तर्पण नाहिं अखंम ॥ए॥ दे
वपूजा थाये नाहिं रात, फरे निशाचर करता घात ॥
रयणी उत्तम न हुए काम, रयणी न जमीयें देखी
आम ॥१०॥ वली प्रत्यक्ष देखाडुं दोष, सांजलीने ती
पजे संतोष ॥ मन मत धरजो कोइ अमर्ष, पहेली
ढाल कही जिनहर्ष ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ १ए ॥ गु
॥ दोहा ॥ खं

॥ माखी आवी अन्नमां, तो थाये ते ः जी, मूके न
कीडी आवे किमे, तो जाये विद्या बुद्ध ॥१॥ जू जो
पहोंचे पेटमां, वधे जलोदर रोग ॥ कोढ करे क
रोलिया, थाये माठा योग ॥ २ ॥ वाल कंठ रोके स
ही, वींछी सडे कपाल ॥ कांटो वींधे तालवूं, तेणे नि
शि जोजन टाल ॥३॥ पंखी जातिमां केटला, चूण
करे नहिं रात ॥ तो माणस कहो किम करे, जेहथी
डुर्गति पात ॥४॥ साची करीनें मानजो, वात कहुं सम
जाय ॥ कथा सरस ए ऊपरें, सांजलजो चित्त लाय ॥५॥

॥ ढाल बीजी ॥ कपूर होवे अतिऊज्ज्व
लो रे ॥ ए देशी ॥

॥ वछदेश रलीयामणो रे, नयर द्वारापुर नाम ॥
लोक तिहां सुखियां वसे रे, विलसे सुख अजिराम रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥१॥ जाइ सुणजो कथा सुरंग ॥ रयणीजोजन टाल जो रे, थाये जेम उछरंग रे जाइ ॥ सु० ॥ ए आंक ी ॥ अमरसेन राजा तिहां रे, पाले राज्य अजंग ॥ री पाय लगावीया रे, कीर्त्ति जास उत्तंग रे ॥ जा ॥२॥ चंद्रजसा पट्टरागिणी रे, रूपें रति साक्षात ॥ णे इंद्रनी अपछरा रे, सहु नारीमां जांत रे ॥ जा ॥ भ्रमर विलुब्धो मालती रे, क्षण मूके नही ... तेम राय राणी मोहीयो रे,राखे अविहड रंग रे ॥ जाइ० ॥ ४ ॥ राज्य संपूरण सहु परें रे, घरमां नवे निधान ॥ पण दुःख छे एक वातनुं रे, नही नृ पनें संतान रे ॥ जाइ० ॥५॥ चित चिंता निशि दि न करे रे, करे अनेक उपाय ॥ पण छोरु आवे नहीं रे, पहोतो छे अंतराय रे ॥ जाइ० ॥६॥ मुज केडे कोण थायशे रे,राज्य तणो रखवाल ॥ मुजकेडें पूरो थयो रे, पडियो चिंता जाल रे ॥जाइ० ॥ ७ ॥ जिण घर पुत्र न चांद्रणा रे,तिणे अंधारो होय ॥ जग शूनो पुत्रां विना रे, हैये विचारी जोय रे ॥ जाइ० ॥ ८ ॥ तें घर घरमांहे कह्युं रे,जिणघर खेले पुत्र ॥ पुत्र स पनें कहिसे रे, कोण राखे घर सूत्र रे ॥जाइ० ॥९॥

पुत्र विना कोण बापनो रे, बोलावे जस वास ॥ गतें घाले पूर्वज जणी रे, मेले सुर आवास रे ॥जा०॥ ॥१०॥ निशिदिन खटक टले नहीं रे, राय तणा म नमांहि ॥ ज्ञानी न जणावे किमे रे, राखे निज म साही रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ पाले राज्य जली परें न्यायवंत जूपाल ॥ ए जिनहर्ष थइ एटली रे, बीजी ढाल रे ॥ जा० ॥ १२ ॥ सर्वगाथा

॥ दोहा ॥

॥ अन्य दिवस परदेशथी,आव्यो जेट तुरंग॥ शालिहोत्र शास्त्रें कह्यां, लक्षण सहित सुरंग ॥१॥ लहुकन्नो कूखें सबल,अति सकोमल गात ॥ कुक्कडकंध सरोस मुख, नहानो पूछ सुजात ॥२॥ अश्व अमूलक गति चपल, देखी एहवो राय ॥ असवारी करवा जणी, मनमां इछा थाय ॥ ३ ॥ साजवाज करी साबतो, राय थयो असवार ॥ कटक सुजट केडें चल्यां, रमवा जणी अपार ॥ ४ ॥ अश्व एडीशुं आहण्यो, पवन परें उपाय ॥ जेम जेम ताणे वाग तेम, राख्यो ही न रहाय ॥ ५ ॥ वक्रपणे ते शीखव्यो, वायें वाय मिलाय ॥ राजाने लेइ गयो,देखंतां समुदाय॥६॥

ा ०॥ गु खं नी.मूके न स्रा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल त्रीजी ॥ रे जाया तुज वीण घडी रे
छमास ॥ ए देशी ॥

[illegible] ॥ किणहीक अटवी लेइ गयोजी, तटिनी वहे अ
[illegible]ग ॥ घोडो तिहां ऊभो रह्यो जी, ढीली मूकी वा
[illegible] ॥ १ ॥ भविक तुं पुण्यतणुं फल जोय ॥ पुण्यें प
[illegible]गल पोतें हुवे जी, जिहां तिहां संपत्ति होय॥भ०॥
[illegible]श्वथकी नृप उतर्यो जी, पाणी पायो तास॥
[illegible] सूतो थयो जी, वन देखे चिहुं पास ॥
॥ भ० ॥ ३ ॥ नरपति तरुछाया जई जी, बेठो चिंते
एम ॥ किहां आव्यो जाशुं किहां जी, त्राण उगरशे
केम ॥ भ० ॥ ४ ॥ इम मनमांहे विचारतां जी, ना
री एक अनूप ॥ आवी पासें भूपनें जी, अद्भुत यौ
वन रूप ॥भ०॥५॥ मन न चले तेहनुं चले जी, मा
रे नयन त्रिशूल ॥ एक नारीने आंबली जी, नरनें मै
ले धूल ॥ भ०॥ ६ ॥ रमजम करती सुंदरी जी, दी
ठी नयण ठरंत ॥ कामातुर नृपनें कहे जी,सांभल तुं
गुणवंत ॥ भ० ॥ ७ ॥ हुं पाताल निवासिनी जी, दे
वी नागकुमार ॥ मोही तुजनें देखीनें जी, तुं मन्मथ
अवतार ॥ भ० ॥ ८ ॥ ए वन मुज रमवा तणुं जी,
प्रीतम अनुमति पामि ॥ रमुं सदा इहां आवीनें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जी, ए सुखनुं छे गाम ॥ ज० ॥ ए ॥ सुरी कहे मुऊ शुं रमो जी, ल्यो यौवननो लाह ॥ मुक्ति जोडी बे म ली जी, मिटे हीयानो दाह ॥ ज० ॥ १० ॥ तुज मुज पूरव लेखथी जी, आवी मल्यो ए योग ॥ तो हवे किशी विचारणा जी, जोगवो मुजशुं जोग॥ज०॥ ॥ ११ ॥ मानव जव पामी करी जी, ल्यो लाहो गु णवंत ॥ अवसर नहीं आवशे जी, पूरो मननी खं त ॥ ज० ॥ १२ ॥ आव्यानें आदर दीये जी, मूके न ही निराश ॥ उत्तम नर पीडे नही जी, पूरे सहुनी आ श ॥ ज० ॥ १३ ॥ वारं वार करुं विनति जी, ढील न खमणी जाय ॥ कामव्यथा महारी मिटे जी, मेलो वो महाराय ॥ ज० ॥ १४ ॥ घणुं कहावो छो कीस्युं जी, मानो मुज अरदास ॥ ढाल त्रीजी पूरी थइ जी, करो जिनहर्ष विलास ॥ज०॥१५॥सर्वगाथा॥५७॥

॥ दोहा ॥

॥ तुं जमरो हुं मालती, फूली यौवन बाग ॥ रस ले रसीया साहेबा, तुं मलीयो मुज जाग ॥ १ ॥ क हुं करीश जो माहरुं, तो तुजनें वर देश ॥ नहीं तो रूठी तुज जणी, इहां ऊजां मारेश ॥ २ ॥ रूठी हुं अति आकरी, तूठी शीतल जाण ॥ अंत न लीजें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तीर्थंकरनो;कीजें वचन प्रमाण ॥३॥ राची अमृत सारि खी,विरची विषनी वेल ॥ एवुं जाणी सापुरुष, मन केरो हव मेल ॥४॥ तुजशुं माहारे मन मल्युं,लागे निविड सनेह ॥ सुख जोगवो संसारनां,नावे अवसर एह॥५॥

॥ ढाल चोथी ॥ म म कारो माया रे का या कारिमी ॥ ए देशी ॥

॥ राय कहे रे देवी सांजलो, मूकी दे एहवी रूढि रे ॥ हुंतो नररूप तुंतो देवता,ए किसी योग्यता मूढ रे ॥राय० ॥ १ ॥ तुं देवी बे देवनी योगता, मानवी मानव योग रे॥सरिखे सरिखुं जोडुं जो मले,तो बदे प्रेम संयोग रे ॥रा०॥२॥ देवी मुजने नियम बे एहवो, माय बहिन पारकी नार रे॥ पारकी नारी केम हुं जोगवुं, सांजली दोष अपार रे ॥रा० ॥ ३ ॥ रावण परनी रे स्त्रीय लंपटी, लइ गयो रामनी नार रे ॥ रामें लंका विध्वंसी करी, बेद्यां दश शिर धार रे ॥ रा० ॥४॥नारी पांच पांमवनी द्रौपदी, शीलवती शिरदार रे॥ कीचक तेह तणो रसीयो थयो, जीमे हण्यो ते णि वार रे ॥रा०॥५॥ इंद्र अहिल्यायें ते मोहियो, गौतम दीध सराप रे ॥ सहस्र स्त्री चिन्ह सरिखां थयां, पाम्यो बहुत संताप रे ॥रा० ॥ ६ ॥ इंद्र तणी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अपछरा चूकव्यो, तपथी ब्रह्मा ततकाल रे ॥ मुख कस्यां मोहवशें चिहुंदिशें, जोवा रूप सकुमाल रे ॥ ॥ रा० ॥ ७ ॥ एम घणेरां रे लोक परनारीथी, पाम्या दुःख नव एण रे ॥ परजवें पण ते घणुं रडवड्या, ल ही वली दुःखनी श्रेणि रे ॥ रा० ॥ ८ ॥ हुं केम ता हरी वातें चातरुं, मेरु चले केम वाय रे ॥ अग्नि वर से कदा नहिं चंद्रमा, अग्नि ताढो नवि थाय रे ॥ ॥ रा० ॥ ए ॥ समुद्र मर्यादा मूके नहीं, शेष धूने न ही शीश रे ॥ गंगाजल मलीन थाये नही, रहे अंध कार केम दीस रे ॥ रा० ॥ १० ॥ तेम मन माहारुं ते पण नवि रूगे, वचन रचना सुणी तुज्ज रे ॥ अन्याय मारग केम हुं संचरुं, अगड जांगुं केम मुज्ज रे ॥ ॥ रा०॥ ११ ॥ राजा पीयर बे परजा तणो, राय प्र जा रखवाल रे ॥ राय अन्याय करे नहीं कदा, म कर तुं वचननी आल रे ॥ रा० ॥१२॥ तुं मुजने बे जामिणी सारिखी, एहवां वचन म बोल रे ॥ ढाल जिनहर्ष ए चोथी थई, नृप कह्यां वचन अमोल रे ॥ ॥ रा० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम सांजली रूठी सुरी, क्रोध करी असराल ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दृढ बंधनशुं बांधीयो, पीड्यो तेणें भूपाल ॥ १ ॥ नारि वचन छानां सुण्यां, आवी नागकुमार ॥ तूठो राय भणी कहे, धन धन तुज अवतार ॥ २ ॥ सत्यवंत तुं सापुरुष, शीलवंत गुणवंत ॥ धीरज ताहारी देखीने, पाम्यो हर्ष अनंत ॥ ३ ॥ मात पिता धन्य ताहरां, जेहनें तुं थयो पुत्र ॥ इहां तो ताहरी कीरति, पामीश सुख अमित्त॥४॥एहवुं कहीने रायनां, बंधन छोड्यां देव ॥ कर जोडी कहे वीनति, वचन निसुण तुं देव॥५॥

॥ ढाल पांचमी ॥ देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ माग वर देवता इम कहे जी, तूठो हुं तुज गुण देख ॥ तुज सरिखो जग को नहीं जी, मूकी तें देवि उवेख ॥ माग० ॥ १ ॥ नरपति भांखे मागुं कीस्युं जी, सांभल नागकुमार ॥ माहरे नही ऊणुंरति किसीजी, राज ऋद्धि भर्या भंमार ॥ माग० ॥ २ ॥ देव कहे सुण देवनुं जी, दरशन निःफल न होय ॥ तेह भणी कांइक माग तुं जी, मुझ तुं प्रीतज जोय ॥ माग० ॥ ३ ॥ प्रीत तिहां अंतर किस्युं जी, अंतर प्रीति विनाश॥तो अंतर किम राखीयें जी, जोइयें मागे [illegible]ज पास ॥ माग०॥ ४ ॥ आग्रह जाणी सुरनो तदा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जी, आपे तो मुज सुत आप ॥ माहरे एटलुं काम छे जी, चिंता मुज तणी काप ॥ माग० ॥ ५ ॥ भा षा समजे सहु जीवनी जी, थो वरदान मुझ एह ॥ देवें वर दीधुं राजा भणी जी, राखीयो एटलो नेह ॥ ॥ माग० ॥ ६ ॥ पुत्र होशे ताहारे सही जी, लेहशे भाषातणो भेद ॥ पण कहेशो जो किण आगलें जी, जीवितनो होशे छेद ॥ माग० ॥ ७ ॥ इम वर दोय देइ गयो जी, नारी लेइ निज लार ॥ आनंद मनमांहे उपनो जी, राय मनहर्ष अपार ॥ माग० ॥ ८ ॥ त रुवर डांहडी वीशम्यो जी,मालो तेणे वृक्षनी माल ॥ रहे तिणमां बे चडो चडकली जी, वात करे सुकुमाल ॥ माग० ॥ ए ॥ पंखीयो कहे सुण पंखणीजी, तुं रहे आपणे गाम ॥ मत किहां जाये इहां थकीजी, हुं जाउं हुं किण काम ॥ माग० ॥ १० ॥ प्रीतम सु ण कहे चडकली जी, आवीश ताहरे साथ ॥ एकल डी हुं केणिपरें रहुं जी,जाये केम रात्रि विण नाथ ॥ ॥ माग० ॥ ११ ॥ पुरुष इछा तणा राजीया जी, न वलीशुं करे नेह ॥ मूलगी नारी वीसारी देजी, पु रुष तो होये निःस्नेह ॥ माग० ॥ १२ ॥ हृदय जू आं मुखना जूआ जी,पुरुषनो किशो विश्वास ॥ ति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पे तुज केडे हुं आवशुं जी, नारी शोन्ने पियुपास ॥ ॥ माग०॥ १३ ॥ एकली नारी केम मूकीयें जी, प्रीतम हृदय विमास ॥ ढाल जिनहर्ष थइ पांचमी जी, वचन सुणे नृप तास ॥ माग० ॥ १४ ॥ सर्व ॥ए४॥

॥ दोहा ॥

॥ चिडो कहे रे चडकली, वहेलोही आवेश॥ तुं कहे ते फोकट कहे, मन शंका नाणेश ॥ १ ॥ हठ लेइ रही चडकली, चडो कहे मत संताप ॥ गौ स्त्री बालक ब्रह्मनुं, नावुं तो मुज पाप ॥ २ ॥ माथुं धूणी चडकली, कहे किशा सम एह ॥ पुरुष हैये खोटा हूए, तुरत देखाडे छेह ॥ ३॥ पुरुष वचन मानुं नही, पुरुष कपटनां गेह ॥ जिम तिम करी नारी जणी, छेतरी जाये जेह ॥ ४ ॥ नारी अबला नर सबल, नरनां हैयां कठोर ॥ न गणे लज्जा लोकनी, करता कर्म अघोर ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥ सुण बेहेनी पीयुडो परदेशी ॥ ए देशी ॥

॥ एतो मीठी वाणी चडकलो, जांखे वाहाली मोरी नारी रे ॥ पंखणी कहुं तुजनें ॥ नर नारी सरिखा नथी, बोलीजें वचन बिचारी रे ॥पं० ॥ १ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निर्लज्ज नारी साजे नाही, . द्ये पुरष तणे शिरदोष रे ॥ पं० ॥ अनरथ सेवे पोतें सदा, वली थइ बेसे निर्दोष रे ॥ पं० ॥ २ ॥ नारी मांहे लक्षण नही, वली नाणे केहनी जीति रे॥पं० ॥जेम मन माने तेम संचरे, गंजे कुलकेरी रीति रे ॥ पं० ॥ ३ ॥ निजस्वा रथ जो पहोचे नहिं,जरतार हणे तो नार रे ॥पं०॥ बार ऊपरशुं लीपणुं, नारीनो नही विचार रे ॥पं०॥ ॥ ४ ॥ एतो नारी क्यारी कूडनी, कपट तणो जंमार रे ॥पं०॥ तें कहेवराव्यानें में कह्या, रीश म करीश तुं नार रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ कोठी धोयां कीच ड नीसरे, नारीशुं केहो वाद रे ॥ पं० ॥ वाद करं तां वेढ थाये घणी, तिसमांहे किश्यो सवाद रे॥पं०॥ ॥ ६ ॥ हवे किमही जावादे मुजनें, पंखणी कहे सां जल कंत रे ॥ पं० ॥ रयणी जोजन पाप ग्रहेजो, तो जावा द्युं गुणवंत रे ॥ पं० ॥ ७ ॥ कान ढांकी क हे पंखीयो, एतो सम न करुं मोरी नार रे ॥ पं०॥ ए तो पातक नवि ऊघडे, एनो तो सबलो जार रे ॥ ॥ पं० ॥ ८ ॥ नही जइयें ए कारज रह्युं, राजा सांज लीयो आप रे ॥ पं० ॥ रात्रिजोजननुं पंखीयां, ते प ण जाले नहीं पाप रे ॥ पं० ॥ ए ॥ सांजली पंखी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ना बोलडा, नृप मन थयो संदेह रे ॥ पं० ॥ पूछुं हुं केहनें जाइ, कोण संशय नांगे एह रे ॥ पं० ॥ ॥ १० ॥ एम चिंतवी घोडे चडी, जोवे कानन मन रंग रे ॥ पं० ॥ साधु लता तरुमंरूपें, देखी हैयडे उछरंग रे ॥ पं० ॥ ११ ॥ तुरत अश्वथी ऊतरी आवी,प्रणम्या मुनिना पाय रे ॥पं०॥ धर्माशीष दीधी रायने, बेठो आगल चित्त लाय रे ॥पं० ॥ १२ ॥ कर जोडी विनय करी घणो, कहो करुणावंत कृपाल रे ॥ पं० ॥ रात्रिनोजननो केटलो, दोष दाखो दीन दयाल रे ॥ पं० ॥ १३ ॥ नरराय सुणो मुनिवर कहे, केम दोष अशेष कहेवाय रे ॥पं०॥ थाये आयु बरस असंख्यनुं, सो रसना सो मुख थाय रे ॥पं०॥ ॥ १४ ॥ कहेतां थाय पूरां नही, रात्रिनोजननां पाप रे ॥ पं०॥ ढाल छठी ए पूरी थइ, जिनहर्ष कहे मुनि आप रे ॥ पं० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ ११४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पण महोटा अवगुण कहुं, सांनल तुं धर्मिष्ठ ॥ छन्नुं नवलगें जीवनी, घात करे पापिष्ट ॥ १ ॥ पातक थाये जेटलुं, एक सर शोषंतांह ॥ एकशो एकनवशो नवे, ते एक दव देतांह ॥ २ ॥ अठोत्तरसो नवलगें,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दव दे पापी कोय ॥ एक कुवाणिज्य जो करे, पाप तेटलुं होय ॥३॥ पूज्य कुवाणिज्य स्यो कहो, जेहनां एटलां पाप ॥ ते संजलावो मुज जणी, टालो मननो ताप ॥४॥

॥ ढाल सातमी ॥ महाविदेहक्षेत्र सोहा मणुं ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिवर कहे तुमें सांजलो, लाख मीण मधु लोय राय रे ॥ घाणी मुशल हल गारुलां, गली महूडांसुं मोह राय रे ॥ मुनि० ॥ १ ॥ विष हथियार न वेचणा, वज्रदंत वस्त्रनाग राय रे ॥ बलद समारी वेचवा, बली वेचे लइ ढाग राय रे ॥ मुनि० ॥ २ ॥ ढेढ कसाइ वाघरी, तेली नें लोहार राय रे ॥ वणजारा अधो वाहिया, चीडीमार मछिमार राय रे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ जव चुमाल्लीश एकशो, पाप कुवाणिज्य जेह राय रे ॥ खोटुं एक कलंक थे, तेटलुं पाप गणेह राय रे ॥ ॥ मुनि० ॥४॥ जनम एकावन एकशो, आल तणो जे दोष राय रे ॥ एक परस्त्री संगतें, थाये पातक पोष राय रे ॥ मुनि० ॥५॥ नवाणुं शो जवलगें, परस्त्री कामे कोय राय रे ॥ एक रात्रिजोजन तणुं, एटलुं पातक होय राय रे ॥ मुनि० ॥६॥ वायस सूकर कूकडो, घूश्रड ने मांजार राय रे ॥ निशिजोजने पासे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सही, रात्रिचर अवतार राय रे ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ मु
निपासें राजा सुणी, निशिजोजनना दोष राय रे ॥
चरणे लागी प्रेमशुं,धरतो मन संतोष राय रे॥मुनि०॥
॥ ८ ॥ एक रात्रिजोजन तणो, दोष अढे मुनिराय
राय रे ॥ तो केम बूटीश तेहथी, कोइ उपाय बताय
राय रे ॥ मुनि० ॥९॥ पूर्वे निशिजोजन कर्या, ते
तो चूल्या अज्ञान राय रे ॥ हवे जाणीने परिहरो,ध
रो धर्मनुं ध्यान राय रे ॥ मुनि० ॥ १० ॥ अमरसेन
राजा करे, रात्रिजोजननो नीम राय रे ॥ मुजने नि
श्चल पालवा, जां जीवुं तां सीम राय रे ॥ मुनि०॥
॥ ११ ॥ वली पूछे अणगारने, स्वामी कहो विचार
राय रे ॥ चिडा चिडकली केम लहे, रात्रि दोष अपा
र राय रे ॥ मुनि० ॥१२॥ एणे वनमांहे मुनि कहे,
समवसर्या जिनराय राय रे ॥ कुंथुजिनेसर सत्तरमा,
तास जणी नमी पाय राय रे ॥ मुनि० ॥ १३ ॥ नि
शिजोजमनो में पूछीयो, स्वामी जांखो दोष राय रे॥
जिनवाणी समजे सहु, सहुने होय संतोष राय रे ॥
॥ मुनि० ॥ १४ ॥ जिन कहेतां पंखी सुण्यो, बेठा
तरुवर डाल राय रे ॥ ए जिनहर्ष पूरी थइ, एटले
सातमी ढाल राय रे ॥मुनि०॥१५॥ सर्वगाथा ॥१३३॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ ते पण पाले आखडी, सांजल तुं जूपाल ॥ ध
न्य पंखी ते बापडा, दोष तज्यो ततकाल ॥ १ ॥ नृप
पूछे कर जोडीने, चिडा चिडी अवतार ॥ किहां लेशे
इहांथी मरी, मुजने कहो विचार ॥ २ ॥ मुनि जांखे
ते पंखीयो, तुज सुत होशे विचार ॥ चीडी जीव तुज
पुत्रनी, थाशे निरुपम नार ॥ ३ ॥ इम संशय नृप
मन तणो, टाल्यो सहु मुणिंद ॥ मनमांहे हर्षित थ
यो, पाम्यो परमानंद ॥ ४ ॥ अश्व हर्यो राजा ज
णी, ते । नथी परधान ॥ चतुरंग सेना लेइ करी, चा
ल्यो बुद्धि निधान ॥५॥ पगे पगे घोडा तणे, आवी सेना
त्यांह ॥ चरणे लागा आवीने, राजा बेठो ज्यांह ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ वींछीयानी देशी ॥

॥ सेना श्रीगुरु चरणे नमि, राय प्रणमी गुरु ता
य रे ॥ आव्यो निजमंदिर हर्षशुं, पुरलोक जणी सुख
थाय रे ॥ सेना० ॥ १ ॥ सुत वात कही राणी आ
गलें, हरषी मनमांहे विशेष रे ॥ प्रीतम मलिया सुख
ऊपनुं, वली पुत्रनूं सुख लहेश रे ॥ सेना० ॥२॥ दो
ष रात्रिजोजनना दाखव्या, गुरुमुख सांजलीया जेह
रे ॥ राज लोकमांहे ते टालीया, शूरवीर नृपति गुण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गेह रे ॥ सेना० ॥ ३ ॥ सुख भोगवतां इम अन्य दा, निशि सुपन लह्युं श्रीकार रे ॥ शणगार्यो विजय थंभ निरखियो, राणी हरखी तेणी वार रे ॥ सेना० ॥ ॥४॥ रायने राणीयें जइ वीनव्यो, थाशे कुल थंभ स मान रे ॥ मनमां निश्चय तुं जाणजे, एणीपरें भांखे राजान रे ॥ सेना० ॥ ५ ॥ जिम जिम ते सुत गर्भे वधे, तिम तिम वाधे नृपराज रे ॥ जींपे सीमाडो राज वी, जय पाम्यो वाधी लाज रे ॥ सेना० ॥ ६ ॥ ह य गय सेना वाधी घणी, पुरदेश वध्या भंडार रे ॥ इम पूरे दिवसें जनमीयो, कुलमंडण राजकुमार रे ॥ सेना० ॥ ७ ॥ उत्सव बहु परें राजा कियो, कहेतां न आवे पार रे ॥ चंदन तोरण करी बांधीयां, शण गार्यां पुर बाजार रे ॥ सेना० ॥ ८ ॥ दश दिवस ल गें उत्सव करी, सुतक दिवसें इग्यार रे ॥ पक्वान्न भो जन भात भातनां, नीपजाव्यां तास न पार रे ॥ से ना० ॥ ए ॥ जिमाव्या पुरजन मानशुं, जिमाव्यो व ली परिवार रे ॥ कीधी सहुनें पहेरामणी, संतोष्या सहु नर नार रे ॥ सेना० ॥ १० ॥ सहु सांभलजो रा जा कहे, सुपना केरे अनुसार रे ॥ जयवाद लह्यो स [illegible] थमे, नामें जयसेनकुमार रे ॥ सेना० ॥ ११ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गुण रूप कला तेज निर्मलो, नीलवट दीपे जगभाण रे ॥ सुरकुमर सरिखो फूटरो, प्रगटी भोमें गुणखाण रे ॥ सेना० ॥१२॥ वालो लागे सहु लोकनें, पुण्यवंत हुवे जे बाल रे ॥ जिनहर्ष पुण्यथी पामीयें, संपूर्ण आठमी ढाल रे ॥ सेना० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिवस उत्संगमां, सुत लही बेठो तात ॥ सहेजें पंखीनी कही, पूरवभवनी वात ॥ १ ॥ सांभली मूर्छा पामीयो, भोंयें पड्यो ततकाल ॥ लोचन मीचाई गयां, चित्त रहित थयो बाल ॥२॥ आकुल व्याकुल नृप थयो, राणी करे विलाप ॥ खमा खमा सहु को कहे, वाय वींजे नृप आप ॥ ३ ॥ पाणी वलमां ऊठीयो, कुमर थयो सावचेत ॥ राय कहे सुत शुं थयुं, थयो अचेत कुण हेत ॥४॥ वात तुमें कहेतां सुणी, पंखीनी में तात ॥ में दीठो भव पाछलो, तेणे थइ एहवी वात ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ १५७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ अलबेलानी देशी ॥

॥ रात्रि भोजननो हवे रे लाल, पाप जाणी तेणें बाल ॥ हितकारी रे ॥ कीधी मनशुं आखडी रे लाल, राज्यकुमर सुकुमाल ॥१॥ हितकारी रे, रात्रिभोजन

पीपली बाजार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नो हवे रे लाल ॥ ए आंकणी ॥ पांच धावें पालीज तां रे लाल, करतां कोडि जतन ॥हि०॥ थयो वरस ते सातनो रे लाल, दीपे जेम रतन्न ॥ हि० ॥ रा० ॥२॥ नृपें नीशालें पाठव्यो रे लाल, करवा कला अभ्यास॥ ॥ हि० ॥ थोडे दिवसें आवडी रे लाल, कला बहोंतेर तास ॥ हि० ॥ रा० ॥३॥ कुमर प्रवीण थयो घणुं रे लाल, विनयवंत गुणवंत ॥ हि० ॥ यौवनवन तन महोरीयो रे लाल, शोभा जास अनंत ॥ हि० ॥रा०॥ ॥४॥ हवे सुणो केणी परें मले रे लाल, पूरवभवनी नार ॥ हि० ॥ श्रीजयसेन कुमारनें रे लाल, सांभलजो अधिकार ॥ हि० ॥ रा० ॥ ५ ॥ वङ्गदेश रलियामणो रे लाल, सरसो जिहां सुभिक्ष ॥ हि० ॥ नगरी तिहां कमलापुरी रे लाल, कमलापुरी प्रत्यक्ष ॥हि०॥ रा० ॥ ॥ ६ ॥ धनवंत तिहां व्यवहारीया रे लाल, सुखीया नें सुकुमाल ॥ हि०॥ लोक वसे तिहां सहु सुखी रे लाल, दुःखीयाना प्रतिपाल ॥ हि० ॥ रा० ॥ ७ ॥ राज्य करे राजा तिहां रे लाल, बलिभद्र महाबलवंत ॥ हि०॥ तेज जास न शही सके रे लाल, अरि गिरि गुफा ग्रहंत॥ हि०॥ रा०॥ ८॥ पट्टराणी गुणसुंदरी रे लाल, गुण सुंदर जिणमांय ॥ हि० ॥ प्रीतमनें वहाली घणी रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लाल,एक जीव दोय काय ॥हि०॥रा०॥ए॥ रूपवंती नें पतिव्रता रे लाल, निर्मल शील धरंत ॥हि०॥ विनय वंती मुख मलकती रे लाल,पुण्यें नारी मिलंत ॥ ॥ हि० ॥ रा० ॥ १० ॥ जयसेना कुंअरी तसु रे लाल, सुरकन्या अवतार ॥ हि० ॥ यौवन पुरुष मन मोहनी रे लाल, गुणनो नहिं कोइ पार ॥हि०॥रा०॥ ॥ ११ ॥ चतुर विचक्षण सुंदरी रे लाल, चोशठकला जंमार ॥हि०॥ गजगति चाले गेलशुं रे लाल,रूप दी धुं किरतार ॥ हि० ॥ रा० ॥ १२ ॥ नीपावी निजहा थशुं रे लाल, ब्रह्मायें करीय यतन्न ॥ हि० ॥ एहवी कन्या फूटरी रे लाल, अवर न केही अन्न ॥हि०॥ ॥ रा० ॥ १३ ॥ सखीवर्गमांहे रमे रे लाल, निशि दिन मन उछरंग ॥ हि० ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थ इ रे लाल, नवमी ढाल सुरंग ॥ हि० ॥ रा० ॥१४॥

॥ दोहा ॥

॥ चिडाचिडी एकण दिनें, तरुवर केरी माल ॥ हीं चंतां दीठा तेणें, मनमां चिंते बाल ॥ १ ॥ किहां एक में दीठा हूंतां, पंखी करतां केल ॥ माले रमतां हिंच तां, चिडा चिडी मनमेल ॥२॥ उहापोह करतां पडी, थइ अचेत तेणिवार ॥ सांजरियो जब पाछलो, चिंते

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चित्त मजार ॥३॥ पहेले जव हुं चडकली, चिडो मुज जरतार ॥ निशिजोजन मूक्युं हतुं, नृपघर लीयो अवतार ॥४॥ पुण्य फल्युं ते मुज इहां, सुखणी थइ अपार ॥ परणुं जो मुजनो मले, पूरवजव जरतार ॥५॥

॥ ढाल दशमी ॥ साहेबा मोतीडो हमारो ॥ ए देशी ॥

॥ चित्त विचारे केम ते मलशे, केम मनोरथ माहरा फलशे ॥ कुमरी जरीयो मन चिंते, कुमरी जरीयो० ॥ए आंकणी॥ चिंता मग्न थइ ते कुमरी, फूल विना रति नहिं जेम जमरी ॥ कु० ॥ १ ॥ अन्न न जावे नीर न जावे, राग रंग श्रवणें न सुहावे ॥ कु० ॥ निज सहियर साथें नवि खेले, रात दिवस नीसासा मेले ॥ कु० ॥ २ ॥ वरस बराबर वासर जाये, तारा गणतां रात विहाय ॥ कु० ॥ शून्य ध्यान बेठी मन ध्यावे, किनहीशुं निज चित्त न लावे ॥ कु० ॥३॥ वर चिंता हैयडामां धरती, रहे उदास दिवस एम जरती ॥ ॥कु०॥ तोडे तृण जूमि सामुं जोवे, न जणावे हियडामां रोवे ॥कु०॥४॥ पूछे सहीयर सांजल बहेनी, म्लान मुख दीसे केम कहेनी ॥कु०॥ चिंता मननी कोने न जणावे, डुःख मननुं तुं कां न जणावे ॥कु०॥ ५ ॥ प्रीति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

साची जो चित्त दाखे, अंतर अमशुं केहो राखे ॥ कु० ॥ चिंता अग्नि चिता जेम बाले, चिंता सुंदर काया गाले ॥ ॥ कु० ॥ ६ ॥ चिंता डानी मार कहीजें, एहनो किम ही न जेद लहीजें ॥ कु० ॥ कंचनवर्णी काया गाली, थाये सांजल तुं सुकुमाली ॥ कु० ॥ ७ ॥ सखी सुणो तुम आगल नांखुं, तुमशुं केहो ? अंतर राखुं ॥ कु० ॥ पूरवजव में दीठो सहेली, पंखी देखी थइ हुं घेली ॥ कु० ॥ ८ ॥ पूर्वजवनो परणुं जरतार, बीजाशुं तो मुज न विचार ॥ कु०॥ राजा बीजा वरने देशे, तो कहोनें सखि केम करीशे ॥ कु० ॥ ए ॥ आरति म नमांहे तेणे सबली, मननी मनमां रहेशे सघली ॥ ॥ कु० ॥ सखीयो कोइ उपाय बतावो, दीजें उत्तर ता त सुहावो ॥ कु० ॥ १० ॥ जयसेना बाइ अवधारो, चिंता म करो थाशे सारो ॥ कु० ॥ कोइक बहेनी प्र पंच करीजें, कालविलंबें फल पामीजें ॥ कु० ॥ ११ ॥ किशो प्रपंच मुने संजलावो, थाये कार्यसिद्धि बतावो ॥ कु० ॥ करो प्रतिज्ञा कोइक महोटी, सखी कहे मत जाणो खोटी ॥ कु० ॥ १२ ॥ किसी प्रतिज्ञा क रुं सहेली, दाखो मुजने हवे वहेली ॥ कु० ॥ सखी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कहे करो चारे विशमी, ए जिनहर्ष ढाल कही दश मी ॥ कु० ॥१३॥ सर्वगाथा ॥ १०९ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ जयसेना जांखे सही, बहेनी प्रतिज्ञा दाख ॥ तुज बोले जव पाठलो, पहेली एहिज जांख ॥ १ ॥ रू प अदृश्य करे वली, द्वितीय प्रतिज्ञा एह ॥ त्रीजी म होटे हय चडी, मंरुप आवे जेह ॥ २ ॥ चोथी का चा सूत्रनें, हिंचे हींरोले जेह ॥ चारे प्रतिज्ञा पूरवी, वर वरवो ते तेह ॥ ३ ॥ जली जली तें बुद्धि कही, ए हथी थाशे सिद्धि ॥ जयसेना हरषी कहे, जली बुद्धि तें दीध॥४॥कुमरी रलीयायत थइ, सुमती सखीनी जो इ ॥ हवे बीजो नर मुज जणी, परणी न शके कोइ ॥५॥ ॥ ढाल अग्यारमी ॥ कुंता माता एम जणे ॥ए देशी ॥

॥ एकदिन दीठी हो कुंअरी, रायें यौवन माती रे॥ परणावी नहिं एहनें, हूंतो थयो ब्रह्मघाती रे ॥ एक० ॥ ॥ १ ॥ सांजल महेंता हो मुज सुता, महोटी थइय अ पारो रे ॥ सरखी जोडी हो जोइनें, परणावुं जरतारो रे ॥ एक० ॥ २ ॥ जांखुं तुमनें स्वयंवरा, मंरुप राय मंगावो रे ॥ देश सहुना हो राजवी, मूकी दूत तेडावो रे ॥ एक० ॥ ३ ॥ परणे कुमरी हो जोइने, मन मा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ने बैर तेहो रे ॥ दोष न आवे हो तुम शिरें, सहुशुं था
य सनेहो रे ॥ एक० ॥४॥ वात सुणावी हो तें न
ली, महेंता मुज मन मानी रे ॥ चारे बुद्धि तुज नि
र्मली, तुंतो गुणवंत ज्ञानी रे ॥ एक० ॥५॥ दूत द
शो दिश पाठवी, राय सहुने तेडावे रे ॥ राय सहु दे
शदेशना, आडंबरशुं आवे रे ॥ एक० ॥ ६ ॥ गुर्जर
शोरठ पूरवी, मालव मरहठ स्वामी रे ॥ कुंकण ला
ट करणाटना, मेदपाट नहिं खामी रे ॥एक०॥७॥
घोड चोड सवा लाखना, नोट वैराट कांबोजी रे ॥ देश
कुणाल पांचालना, कोशल अधिपति मोजी रे ॥ एक०
॥८॥ वंग कलिंग वखाणीयें, जंगल अंग तिलंगी रे
॥ मगध सिंध सिंहलपति, द्राविड दसारण रंगी रे ॥
॥ एक० ॥ ए ॥ द्रोण चीण हरमज धणी, मरुमंडल
कुरुदेशी रे ॥ इत्यादिक देश देशना, स्वदेशीने परदे
शी रे ॥ एक० ॥१०॥ आव्या निज परिवारशुं, पुत्र
पुत्रा संजोडी रे ॥ कहे जिनहर्ष अग्यारमी, ढाल नली
परें जोडी रे ॥ एक० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ २०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वछदेश तिहां आवीयो, नगर धारापुर दूत ॥
सनामांहे ऊनो रह्यो, अमरसेन पुर हुंत ॥ १ ॥ बलि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नइ नृप कमलापुरी,स्वयंवर मंरुप ज्यांह ॥ पुत्रीना मंरुप अबे,राज्य पधारो त्यांह ॥२॥ अमरसेन जय सेनशुं, चाल्या सैन्य संघात ॥ अविछिन्न प्रयाणशुं, आव्या पुर थइ वात ॥३॥ राजा बहु नेला थया, बलिनद्र नूप तिवार ॥ पुरपरिसर उतारीया, अवल हवेली सार ॥४॥ नक्ति करे राजा घणी, राजवीयांनी जोर ॥ जे जे जोइयें ते सहु, आपे करीने होर ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ बींदलीनी देशी ॥ मांकड मूछालो ॥ ए देशी ॥

॥ निज मेरे राय राणा, करे केली सहु सपराणा हो ॥ अचरिज वात सुणो, वात सुणो हवे आगें, सांनलतां मीठी लागे हो ॥ अ० ॥१॥ जयसेन कुमर नीसरीयो, रमवा वनमां संचरीयो हो ॥ अ० ॥ एक वृक्ष नीकुंजमां आयो, धरतो मन हर्ष सवायो हो ॥ अ० ॥२॥ बेठो दीठो संन्यासी, वींट्यो तन चर्म विलासी हो ॥ अ० ॥ आंखडीयां तो गइ ऊंमी, ते पण दीसंती नूंमी हो ॥ अ० ॥३॥ मुख वांकुं वांकी नासा, लडबडता होठ तमासा हो ॥ अ० ॥ दांत तो गजदंत समाणा, पग ठोटा साथल घाणा हो ॥अ०॥ ॥४॥ कान महोटा माथुं महोटुं,कोढ रोग शरीर ठे

बेटुं हो ॥ अ० ॥ एहवे रूपें ध्यानें ते साधे, फिर
ख्यो जयसेन समाधें हो ॥ अ० ॥५॥ पूछे पापकामी
ने कुमार, एहवो श्यो ए आकार हो ॥ अ० ॥ स्वा
मी ए मुजनें कहियें, मनमांहे अचरिज लहीयें हो
॥ अ० ॥ ६ ॥ वाणी सुणी एहवी योगी, फरी चर्म
ते ठंढ्यो रोगी हो ॥ अ० ॥ थयो रूप अदृश्य तेवा
रें, नृपसुत मनमांहे विचारे हो ॥ अ० ॥ ७ ॥ अच
रिज मुझ चित्त उपायो, संन्यासी किहां सिधायो हो
॥ अ० ॥ बेठो तेणे ठाम न दीसे, इंद्रजाल जंजाल
जगीशें हो ॥ अ० ॥८॥ वली चर्म मूक्यो तेणे दूरें,
जाणे तेज देखाड्युं सूरें हो ॥ अ० ॥ कंचन सम
दीपे काया, पद्मासन ध्यान लगाया हो ॥ अ० ॥
॥ ए ॥ पूछे नृपसुत हितकामी, शुं कीधुं ए तें स्वा
मी हो ॥ अ० ॥ हुं सिद्ध अछुं ते बोले, ए चर्मने
कोइ न तोले हो ॥ अ० ॥१०॥ तुजने ए ख्याल देखा
ड्यो, तुज चित्त संदेहें पाड्यो हो ॥ अ० ॥ हुए रू
प कुरूप ठंढेथी, थाये अदृशीकरण शुभ तेथी हो
॥ अ० ॥ ११ ॥ होवे सहज रूप मेलंतां, एम होये
रमतां खेलंतां हो ॥ अ० ॥ ए जाति चर्मनी एहवी,
तुज आगल कही हती जेहवी हो ॥ अ० ॥ १२ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चर्मनो मर्म सांजलीयो, प्रणाम करीने वलीयो हो ॥ अ० ॥ जिनहर्ष ढाल थई बारे, नृप सुत आव्यो ऊतारे हो ॥ अ० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ २२३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली रमवा केरे मिशें, कुमर आव्यो वनमां हे ॥ तेणे ठामे देखे तिसें, अग्नि कुंड उत्साहे ॥१॥ पावक दारुशुं पूरीयो, जालो जाल विकराल ॥ शीं को एक तांतण करी, बांध्यो तरुवर माल ॥ २ ॥ कुमर सिद्ध पासें रह्यो, जोवे तेह अचंज ॥ जोगीनें पूछे प्रजो, मांमथो श्यो आरंज ॥३॥ सिद्ध कहे विद्या जणी, अष्ठोत्तर शो वार ॥ नर बेसी शींके श्णे, साहस धरीय अपार ॥ ४ ॥ विद्या आकाशगामिनी, जके नर आकाश ॥ जो तूटे ते तांतणो, तो खेचरगति तास ॥५॥ जो तूटे नहिं तांतणो, तो तंतुसिद्ध कहाय ॥ कुमर जणी योगी कह्युं, पायें लाग्यो धाय ॥६॥

॥ ढाल तेरमी ॥ सुण सुण वालहा ॥ ए देशी ॥

॥ पठी सदा तांतण तणी रे, खाट हिंमोले रे जोय ॥ सांकल सम होये बेसतां रे, तंतु सिद्ध एम होय रे ॥१॥ पुण्य सदा फले ॥ परजवें लाहो थाय रे, पुण्यें सहु मले ॥ अणचिंत्यां फल पाय रे ॥ पुण्य० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ २ ॥ बीहेतो कुंमां पडे रे, बीहे नहिंतो रे सि
द्धि ॥ विद्या आकाशगामिनी रे, बेहुमांहे एकनी
वृद्धि रे ॥ पु० ॥३॥ योगी कहे शींको कस्यो रे,जो
डी सामग्री रे एह ॥ मंत्रतणुं पद वीसखुं रे, काम न
थाये सिद्ध रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ कुमर कहे योगी जणी
रे, विद्या जणी देखाड ॥ पदानुसारिणी मुज अढे
रे, जोडुं अक्षरमाल रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ खोट काढुं
विद्या तणी रे, जांणुं ताहारी रे चिंत ॥ कारज सिद्ध
थाये सही रे, मंत्र जणो गुणवंत रे ॥ पु० ॥ ६ ॥ परउ
पगारी तुं सही रे, मुजनें मलियो रे मित्र ॥ विद्या प
द पूरण करी रे, टालो मननी चिंत रे ॥ पु० ॥७॥
मंत्र सुणाव्यो कुमरने रे, पद पूखुं ततकाल ॥ सिद्ध
पुरुष हर्ष्यो हीये रे, बोले वचन रसाल रे ॥ पु० ॥
॥ ८ ॥ चर्म अपूरव तुज जणी रे, आपुं ले तुं एह ॥
उपगारें उपगारडो रे, करीयें तो वधे नेहो रे ॥ पु० ॥
॥ ए ॥ विद्या पण इहां साध तुं रे,सिद्धि होशे तुज
वीर ॥ वचन खरुं तुं मानजे रे, तुं ढे साहसधीर रे ॥
॥ पु० ॥१०॥ पहेलो तो साधो तुमें रे, सामग्री सं
योग ॥ तुम केडे हुं साधशुं रे, देई मन उपयोग रे ॥
॥ पु० ॥ ११ ॥ योगी कहे मुज साधतां रे, तांतण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्रूटे रे जेह ॥ ते तुं पाठो सांधजे रे, विद्या सिद्धि हो शे एह रे ॥ पु० ॥ १२ ॥ शीख देइ इम कुमरनें रे, शींके बेठो रे सिद्ध ॥ तांतण त्रूटा ते सहु रे, खेचर विद्या लीध रे ॥ पु० ॥ १३ ॥ आकाशें ऊडी गयो रे, सिद्धपुरुष ततकाल ॥ ए जिनहर्ष पूरी थई रे, ए टले तेरमी ढाल रे ॥ पु० ॥१४॥ सर्वगाथा॥ १४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे साहस धरी, साधी तेणें ते वार ॥ शींके बेठो ततक्षणें, त्रूटो नहीअ लगार ॥ १ ॥ तंत्र सिद्ध हूउं सही, मंत्र प्रमाणे ताम ॥ पण आकाशें उ ड्यो नहिं, तेतो न थयुं काम ॥२॥ तंत्र सिद्ध तो हुं थयो, एहिज मुज प्रमाण ॥ चर्म लेहीनें आवीयो, पो तानें अहिठाण ॥ ३ ॥ चर्म रतन साध्युं तिहां, मेरा मांहे कुमार ॥ निचिंतपणे सूई रह्यो, जाग्यो राय ते वार ॥ ४ ॥ सीयाल सांजल्यो बोलतो, सुर नर समजी वाच ॥ चित्त विमासे एहवुं, प्रथम थइ छे साच ॥५॥

॥ ढाल चौदमी ॥ तुंगिया गिरि शिखर सोहे ॥ए देशी ॥

॥ सांजली नृप शीयाल भाषा, कहे मांहोमांहि रे॥ टलवले नर एक पडीयो, जइ करीयें जाइ रे ॥सां०॥ ॥ १ ॥ राय एहवां वचन सांजली, दया आवी ताम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ जीवताने एह खाशे, होशे मातुं काम रे॥सां०॥ ॥ २ ॥ जागव्यो निजकुमरने नृप, कहे एम वचन्न रे ॥ करे ढे आक्रंद कोइ नर, दुःखें पीड्यो तन्न रे ॥ सां० ॥ ३ ॥ शीयाल तेहनें जक्ष करशे, तास ज इ मेलाव रे ॥ करो जइ उपकार पुत्ता, ऊठ वार म लाव रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ कुमर ऊव्यो दया आणी, ता त वचन प्रमाण रे ॥ विनयवंत सुपुत्र थाये, ते न लो पे आण रे ॥ सां० ॥ ५ ॥ खड्ग लेइ तुरत चाव्यो, लवे जिणदिशि श्यायाल रे ॥ शूरनां ते शूर थाये, कि शुं महोटा बाल रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ आवीयो जिहां प ड्यो माणस, टलवले तस पिंम रे ॥ वात सरजी कि मे न टले, कोण जांजे जीड रे ॥ सां० ॥ ७ ॥ तेहनें बोलावीयो तुं,कोण ढे नर बोल रे ॥ केम पडीयो खा णमांहे, लह्यो दुःख निटोल रे ॥ सां० ॥ ८ ॥ बोली शके नहिं बापडो ते, हैये आव्यो जार रे ॥ ताम क समसतो पयंपे, अहुं हुं कुंजार रे ॥ सां० ॥ ए ॥ जो गीतणी हुं करुं सेवा, नमुं तेहना पाय रे॥ माहरे घ रे थई लखमी, तेहने सुपसाय रे ॥ सां० ॥ १० ॥ एकदिन मुज घरें आव्यो, तेह जोगी आप रे ॥ चरणे नमी बेसाडीयो में, गयां माहरां पाप रे ॥सां०॥११॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पात्र पूछ्युं तेहनुं में, जक्तिशुं परमान्न रे ॥ थइ संतुष्ट ने पूरी आसन, दीधुं जोजन मान रे ॥ सां० ॥१२॥ सुण प्रजापति एक तुजनें, दीयुं विद्या सार रे ॥ लोक नें आश्चर्यकारी, लहे मान अपार रे ॥ सां० ॥१३॥ अश्वमाटीनो करीनें, तावडे सूकाय रे ॥ अग्निमांहे पचावी मंत्र, चालतो ते थाय रे ॥ सां० ॥ १४ ॥ म में तो असवार थाजे, घालजे अथ जार रे ॥ चौदमी जिनहर्ष पूरी, थई ढाल विचार रे ॥ सां० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्र शीखाव्यो मुज जणी, तेणे जोगी ततका ल ॥ महारो मन हर्षित थयो, कीधो एणे उपकार ॥१॥ हय कीधो माटी तणो, मंत्रबलें ततकाल ॥ हेषारव करतो थको, चालंतो मछराल ॥ २ ॥ महिमा वाध्यो माहरो, देशांतर थयुं नाम ॥ मंत्र गयो मुज वीसरी, केटले दिवसें ताम ॥ ३ ॥ जोगी सिद्धाचल गयो, के डें गयो हुं तास ॥ फेरी मंत्र खरो कीयो, पूगी महा री आश ॥ ४ ॥ पगे लागी पाछो वल्यो, लागा मुज षट मास ॥ कालें आव्यो हुं इण पुरी, धरतो मन उ ल्हास ॥ ५ ॥ राजानी परणे सुता, आव्या घणा न रिंद ॥ कला देखाडुं एहने, अश्व करी आनंद ॥६॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल पन्नरमी ॥ इम्मर आंबा आंबली रे,
इम्मर दाडिम द्राख ॥ ए देशी ॥

॥ माटी खणवा ऊठीयो हो जी, जाजी लेई रात॥ आणी अश्व नरी करी होही, वली आव्यो परन्नात ॥१॥ सुगुणनर, सांनल महारी वात ॥ लोनें दुःख प्राणी लहे होजी, थाये आतमघात॥सु०॥ए आंकणी॥ खणतां खाण तूटी पडी होजी,हुं चंपाणो हेठ॥केड नांगी वेदन थइ होजी, फोकट कीधी वेठ ॥सु०॥२॥हवे हुं जीवुं नहिं होजी, लागो मर्म प्रहार॥तुं आव्यो दुःख कापवा होजी, धन्य धन्य तुज अवतार ॥सु०॥ ॥३॥ मंत्र आपुं ले तुज नणी होजी, अश्वकरण उपकार ॥ मंत्र शीखाव्यो कुमरनें होजी, प्राण तज्यां कुंनार ॥ सु० ॥ ४ ॥ निरखी जाल पावक तणी होजी, एशुं दीसे आग ॥ रायसुत पासें गयो होजी, ताणी ले गयो नाग ॥ सु०॥ ५ ॥ अश्व पचंतो निरखीयो होजी, शीतल करी ग्रही हीत॥मन विकस्यो तन उल्लस्यो होजी, जाणे अमृत पीत ॥ सु० ॥ ६ ॥ शांतें आव्यो बाहरें होजी, तात नणी कहे आय ॥ घात थइ ते नर तणी होजी, खाणे प्राण नसाय ॥ सु० ॥ ॥७॥ बीजुं कांइ कह्युं नहिं होजी, सुता पिता सुत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जाय ॥ पोते पुण्य जेहने हुए होजी, तास मले सहु आय ॥ सु० ॥७॥ प्रहदिसि नोबत घूरी होजी, थयो सफल प्रजात ॥ शणगारी कमलापुरी होजी, सुर नगरी साक्षात् ॥ सु० ॥ ए ॥ स्वयंवर मंरूप रच्यो होजी, सुंदर सोहे अपार ॥ सिंहासण मंरूावीयां होजी, नृपकाजें शणगार ॥ सु० ॥१०॥ चोकी मांरूी जूजूइ हो जी, चंडुआ बांध्या पटकूल ॥ वाड बंधावी रे शमी होजी, सुंआली अकतूल ॥ सु० ॥ ११ ॥ कृष्णागरुना धूपणा होजी, महकी रह्या चिहुं उर ॥ कस्या ढटकाव गुलाबना होजी, खसबोइ वधी जोर ॥ सु० ॥ १२ ॥ राय तेडाव्या मंरूपें हो जी, आव्या धरता हांश ॥ पवन जकोलें विंजणे होजी, धन्य वर से जे पुंस ॥सु०॥१३॥ बंदीजन बिरुदावलि होजी, मागण मल्या अनेक ॥ ढाल पन्नरमी ए थइ होजी, धरी जिनहर्ष विवेक ॥सु०॥१४॥ सर्वगाथा ॥२७३॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे बोली चिंता जरी, कुमरी सहियर संग ॥
नृप मुज मन जाणे नहिं, केम रहेशे इहां रंग॥१॥
आरंज मांरूयो अति घणो, प्रिय विणा सहीयांह ॥
हांसी थाशे लोकमां, कुमरी एम कहीयांह ॥२॥ इम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिंतवतां चित्तमां, फुरक्युं वामुं अंग ॥ [illegible]
हियडो हस्यो,अंग थयो उछरंग ॥३॥ बाई सुण सही
यर कहे, मुख दीसंतुं विछाह ॥ हमणां मुख थयुं उज्ज
लुं,दीसे अंग उछाह॥४॥तुजने वर मलशे इहां,मलीया
नृप अनेक॥चार प्रतिज्ञा पूरशे,ते वर वरवो एक॥५॥
॥ ढाल शोलमी ॥ लाछलदे मात मल्हार ॥ए देशी॥
॥ सखी कहे विधि लेख, लखीयो जे सुविशेष,
आज हो आघो रे पाछो बहिन टले नही रे जो॥जि
णशुं छे अनुबंध, पूरवभव संबंध, आज हो मलशे
रे ते आवी अणचिंत्यो सही रे जो ॥ १ ॥ एणी परें
करतां वात, तेडावी निज मात, आज हो जावो रे
बोलावो ल्यावो कुंअरी रे जो॥ थाय अवेलो आज,
पीठी करवा काज,आज हो आवी रे मन भावी वा
ली दीकरी रे जो ॥२॥ पामी राय आदेश, हियडे
हर्ष विशेष, आज हो चंदन रे बावन्ने उगटणुं कीयो
रे जो॥शुचि जल न्हाण कीध, अंगूछे सुप्रसिद्ध,आ
ज हो मुहूर्त्त रे सुमुहूर्त्त वेला आवीयो रे जो॥३॥
अंगें बनाव्या शोल, सूत्र तांतण हिंगोल, आज हो
लेइ रे वरमला मंरूप संचरी रे जो ॥ प्रातिहारिणी
साथ, कनकछडी ग्रही हाथ, आज हो जाणे रे सु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रपुरथी देवी ऊतरी रे जो ॥४॥ चिंते देखी नूपाल, सुरकन्या सुकुमाल, आज हो खेचर रे कन्या के नाग कुमारियां रे जो ॥ एहनुं रूप अनूप, कह्युं न जाये स्वरूप, आज हो जींती रे एणे त्रिभुवन केरी नारियां रे जो ॥ ५ ॥ देखी रंज्या राय, लोयण रह्यां लगा य,आज हो गकी रे आंखडीयां पाठी नवि वले रे जो ॥ दीपे दंत रसाल, जाणे मोतीमाल, आज हो जाणे रें रवि किरणा सरिखां ऊलहले रे जो ॥६॥ नयनकमल दल जाण, अणीयालां गुणखाण, आज हो तीखां रे मनमथनां सायक लागणां रे जो ॥ ना क दीवानी धार, चंपकली आकार, आज हो देखी रे रंजित थाये कामी जना रे जो ॥ ७ ॥ अधर प्रवा ली रंग, तेथी अधिक सुरंग, आज हो दर्पण रे सा रिखा गलस्थल बन्या रे जो ॥ गजकुंनस्थल मोज,ए हवा जास उरोज, आज हो पीला रे बीजोरां वरणें अवगण्या रे जो ॥ ८ ॥ काने शोहे जाल, दीपाव्या जेणे गाल, आज हो खटके रे खीटलीयां ऊबके ऊम णां रे जो ॥ चावंती तंबोल, सहीयांशुं रंगरोल,आ ज हो पहेर्यां रे हियडे आनरण सोहामणां रे जो ॥ए॥ उर कंचूकह ताणि, पहिर्यो कुमरी सुजाण, आ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज हो जाणे रे ईश्वर शिर तंबू ताणीयो रे जो ॥ सोवन चूडलो बांह, जाणे सुरतरु ढांह, आज हो बांहे रे बा जुबंध नाग वखाणीयो रे जो ॥१०॥ कनक मुद्रडी खंत, अंगुलीयें सोहंत, आज हो सोवन रे अंगुठी अंगूठे बनी रे जो ॥ कटिमेखल खलकंती, घूघरीयां घ मकंती, आज हो पायें रे जेहर सोवनमय वाजणी रे जो ॥११॥ पहेरी पटोली अंग, उढण चीर सुरं ग, आज हो झबके रे आभरणमां जाणे वीजली रे जो ॥ हसती रमती गेल, जाणे मोहनवेल, आज हो पूरी रे थइ शोलमी ढाल जिनहर्ष रली रे जो ॥१२॥

॥ दोहा ॥

॥ नारी जोवा पासमां, राजहंस ततकाल ॥ दे खी व्यामोहित थया, बंधाणा ततकाल ॥ पाठांतरे॥ (पुरुष पडे जेम माछलो, ज्यारें खूटेकाल) ॥ १ ॥ रे जगदीश किशा भणी, तें उपजावी नार ॥ इण नारी नर भोलव्या, भूला भमे संसार ॥ २ ॥ इणे नारी जग मोहीयुं, हाव भाव देखाड ॥ पोताने वश सहु किया, मनमृग बंधण जाल ॥ ३ ॥ जेहने घरे ए कामिनी, थाशे ते धन्य धन्य ॥ बीजा फोकट अवत रया, पशुवश जेम रतन्न ॥ ४ ॥ जेहने आपशे ए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रिया, तेहशुं ताहरे प्रीति ॥ बीजाशुं तुज रूसणो, एह किसी तुज रीति ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०५ ॥ ॥ ढाल सत्तरमी ॥ बे कर जोडी ताम रे, नम्रा वी नवे ॥ए देशी ॥ अथवा, जंबूद्वीपमझार, पुरह थिणाउर ॥ए देशी ॥ अथवा, पामी सुगुरु पसाय रे ॥ ए देशी ॥

॥ लखीयो जेह निलाड, तेहिज पामीयें, होंश कीजें केही घणी ए ॥ देखी परायां लाड, हीयडा हुरकडो, फोकट करे किस्या नणी ए ॥१॥ जेणे दीधुं बे दान, पुण्य कर्यां घणां ॥ ते लेहेशे ए कामिनी ए ॥ वरसेतो नर एक, पण सहुनां मन, करया चंचल गजगामिनी ए ॥२॥ रूडा तणी रुंहाड, मन कीजें नहीं, फोकट मन विणसाडीयें ए ॥ विधि लखियो संबंध, मांशे तेहनें, चित्तथी सत्य केम डांमीयें ए ॥ ३ ॥ राजा करे वि चार, तृपति न जोवतां, पामे न मन चूजी रह्यो ए ॥ प्रातिहारिणी ताम, सहुनें उलखे, नाम लेइ लेइ कह्यो ए ॥ ४ ॥ चांदो ए चहूआण, महोटो राजवी, ए सहसो सीसोडीयो ए ॥ ए पालण परमार, हयगय रिद्धि घणी, जगमांहे एणे जस लीयो ए ॥ ५ ॥ परव तजी पडिहार, परवत जेहवो, अरि खीसवीयो न त्रि खसे ए ॥ रणसिंह ए राठोड, महोटो गढपति,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रजा सदु सुखणी ससे ए ॥६॥ शोलंकी नृप चंद्रसेन, सेना परिगल, जांजे पण जांगे नहिं ए ॥ मरहठो महिपाल, महीयल राखणो, ख्याति जगतमांहे लही ए ॥ ७ ॥ शंखराय सुविदित, न्याते सांखलो, एहनें घेर नारी घणी ए ॥ सिंहलवांको राय, श्रीधर राजवी, ए महोटा गढनो धणी ए॥८॥सबल सिंह महा राय, सोलंकी साखें, जेहने दल संख्या नहिं ए ॥ जादव नृप जयपाल, पाले लोकनें, कीर्त्ति जेहनी महमही ए ॥ए॥ गंगाधर गहिलोत, गंगाजल जि स्यो, जस जेहनो छे निर्मलो ए ॥ जालो जांजण सिंह, चतुर विचक्षण, कला बहोंतेर आगलो ए ॥ ॥१०॥ विगतालो वणवीर, महिमा जेहनो, वाघेला मांहे दीपतो ए ॥ हाडो राव हमीर, देवराज देवडो, अरियणनुं बल झीपतो ए ॥११॥ सगरराय सेलोत, सहदेव सोनगरो,अमरसेन ए आहडो ए ॥ ए वछ देश शणगार, जयसेन तसु सुत, धीरवीर वर वांक डो ए ॥ १२ ॥ राजवीयांनां नाम, कहे बिरुदाव ली, कुमरी मन माने नही ए ॥ ढाल सत्तरमी एह, नर नारी सणो, रूडी जिनहर्षें कही ए ॥ १३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ शाने समजावे सखी, चार प्रतिज्ञा दाख ॥ स घला नरपति सांजले, जली परें तुं जाख ॥ १ ॥ स खी सहुको सांजलो,मलिया बहु भूपाल ॥ चार प्रति ज्ञा पूरशे, ते ग्रहेशे वरमाल ॥ २ ॥ माटी तुरंग च लावशे, कहेशे पूरव जम्म ॥ तांतण हींचोलें हिंचशे, रूप फेरवशे तिम्म ॥३॥ एहवुं सांजली राजवी, थ या वदन विछाय ॥ एक एकनें एम कहे, एतो किमे न थाय ॥ ४ ॥ एता बोलावी नृपति, शुं कीधुं एणे राय॥मान महोत सहु निर्गम्यो,बेटीनें शीखाय ॥५॥

॥ ढाल अढारमी ॥ तुंगीया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

॥ वयण सुणी हरख्यो हीये,तव जयसेन कुमारे रे॥ ए कला मुजमां अछे, पूरीश प्रतिज्ञा चारो रे ॥व य० ॥ १ ॥ तुरत कुमर ऊठी करी, उंड्यो उलटो च र्म रे ॥ रूप फरी गयो मूलगो,कोइ न जाणे मर्म रे ॥ वय० ॥२॥ माटीने घोडे चडी, आव्यो स्वयंवर ठा म रे ॥ सजा सहु देखी करी, अचरिज पामे ताम रे ॥व० ॥३॥ हाथ गल्या पग पण गल्या, बाहेर दांत नीकलीया रे॥लांबो पेट कूआ जिस्यो, केश माथानां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पलीयां रे ॥ व०॥ ४ ॥ काया तो रोगें नरी,वांसें तो डुर्गंध रे ॥ वांसें रुधिर वहे घणुं, बोले वचन निबंध रे ॥ व० ॥ ५ ॥ एहवुं रूप बनावीयुं, माटी तणे तुरंग रे ॥ थइ असवार फरे तिहां,मंरूपें धरी उछरंग रे ॥ व० ॥ ६ ॥ कौतुक मनमां ऊपजे, केडे लोक उजाय रे ॥ तुरत घोडाथी ऊतरी,हींचोले हींचाय रे ॥ व० ॥ ७ ॥ त्रूटे नहिं एक तांतणो, लोह सांकल सम जाणो रे॥ लोक कहे तुज नामशुं, धूंबड नाम पीछाणो रे ॥ व० ॥ ८ ॥ हिंचोले केम हींचीयो, पूरवनवनी ढालो रे ॥ चिडो चडकली अमें हुतां, हिंच्यां बुंबहु कालो रे ॥ व० ॥ ए ॥ कुमरी वयण सुणी करी, पामी सघलो नेदो रे ॥ पूरवनवनो पति मुज सखी, मलीयो घणे उमेदो रे ॥१०॥ सखी कहे एहने वर्यां, चडशे सुकुल कलंको रे ॥ यौवन जीवन विणसशे, हसशे लोक निःशंको रे ॥ व० ॥ ११ ॥ ए वर नहिं तुज योग्यता, निसुणी वचन कुमारी रे॥ जे निज बोल पाले नही, तेतो बे नवहारी रे ॥ व०॥ १२ ॥ माहारी प्रतिज्ञा पालशुं,वचन गमुं केम आलो रे ॥ वरमाला धूंबड गलें, घाली तेणे ततकालो रे ॥ व० ॥ १३ ॥ कोपें नरीया राजवी, स्वयंवर एणे बिगाड्यो रे॥ मा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रो कुमरी बापनें, सघलो काम ऊजाड्यो रे ॥ व० ॥ ॥१४॥ दोष किस्यो कहो बापनो, कुमरी थइ अजाणो रे ॥ ढाल थइ ए अढारमी, सुणो जिनहर्ष सुजाणो रे ॥ व० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे सहु एम राजवी, धूंबड माला मूक ॥ प्राणे पण लेशुं अमें, जीवथकी मत चूक ॥ १ ॥ बोले धूंबड बल करी, जलें जलें हो राय ॥ जाण्या ह ता बे पायना, पण दीसो ढो चउपाय ॥२॥ बोलो ढो चूका थका, एवो करो ढो न्याय ॥ आवी वर माला तजे,ते मूरख कहेवाय ॥ ३ ॥ प्राणे में लीधी नथी, खुशी थईने एह ॥ घाली तो मुज शिरसटे, ब्यो उलक होय जेह ॥ ४ ॥ एवी मतिसारु तुमें, केम पालो ढो राज ॥ वात इसी करतां थकां, नावे तुम नें लाज ॥ ५ ॥ होठ रूसे रीशें जरया, ए धुंबड कुण मात्र ॥ बोले एहवो आकरो, करो घात ए वात ॥६॥ कुह्यो रूप बोले कह्यो, मारण उठ्या दास ॥ घोडो चांप्यो सामहो, नाठा पामी त्रास ॥ ७ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ मानना गाडला सैन्यना लाडला, क्रोध जरी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

या हिया जोध धाया ॥ मारी ह्यो जाली ह्यो बांधी ह्यो धूंबडो, एम कहेतां नराधीश आया ॥मान० ॥ ॥ १ ॥ गयवर गाजता सूंढ ऊलालता, चालता पर्वता टूक दीसे ॥ धूणतां शीश सुर ईसरा सारिखा, चपल तेजी घणा वीचें हींसे ॥ मा० ॥ २ ॥ हुइ असवार तरवार ढालां ग्रहे, धनुषधर तीर तूणीर भरीया ॥ कुंतविजूझला उज्ज्वला सारना, धारना तिक्षण निज हत्थ धरीया ॥ मा० ॥ ३ ॥ आव रे धूंबडा कूबडा सामहो, नासजे मत हवे त्रास पामी ॥ ताहरा हाथनो बल हवे जाणस्यां, आणस्यां ताहरे वंश खामी ॥ मा० ॥ ४ ॥ कां रे मरे तुं खूट्या विण बापडा, नाख वरमाल के काल रूठो ॥ एकलो केकलो जोर फोरे किश्यो, जलधि संग्राम तुं लोट मूठो ॥ मा० ॥५॥ कायरां नरां किस्युं घणा हुवां शुं थयुं, तुल जिम वायरे ऊडी जाशो ॥ माहरा हाथ भारथमां कुण सहे, भीति मन रीति जे रीत जाशो ॥ मा० ॥ ६ ॥ वचन सुणी कुमरनां आकरा कांकरा, ऊठीया मारवा सहु समेला ॥ मरी कुंभार तेणी वार व्यंतर हूउ, आवीयो ताम संग्राम वेला ॥ मा०॥ ७ ॥ देवनी शक्ति धरी भक्ति निज शिष्यनी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कटक घट सुन्नट तव मेली आव्यो ॥ जीर कुंअर त णी होंश मनमें घणी, राखवा सुत यमदूत लाव्यो ॥ मा० ॥ ७ ॥ ऊमरा धूमरा धूमरा जाणजे, लोहना बाण सींगण चडावे ॥ नाल गोला वहे वेरीयोने द हे, क्रोध जरीया हीयामां न मावे ॥ मा० ॥ ए ॥ मुहरि करि गजघट पटा जरता प्रबल, चालता जाणे ऊंचा हिमाला ॥ जाडता सूंढशुं तुंरु ज्युं अ रिगजा, पायदलशुं लडे जीडे पाला ॥ मा० ॥१०॥ कूदता नाचता अश्व गयणे चडे, त्रापडे आपडे न हीय कोई ॥ चढे योधार खड्गधारशुं आहणे, घाव ए कणथी बे टूक होई ॥ मा० ॥ ११ ॥ कारिमा यो धना हाथना घावशुं, साथरा हूआ धड शीश जूआं ॥ रक्तना खाल बंबाल नदीयां वही, चिंतव्या पयचरा तेण हूआ ॥ मा० ॥ १२ ॥ सुन्नट घायें घणा घू मता ऊमता, कटकनी आकरी हूंक वाजे ॥ राखवा ख्याति क्षत्री क्षत्रवट तणी, नाशि जश्यें तो हवे वंश लाजे ॥ मा० ॥ १३ ॥ घाव सामे अडे आथडे केइ पडे, आरडे ज्यांह निज जीव वाल्हा ॥ सेरीयां केइ नासेइ वांसे पड्या, मारतां गह्न हूआ सुंढाला ॥ मा० ॥१४॥ कटक व्यंतरतणे आहण्या अरि घणा,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आपणा शिष्यनी जींत कीधी ॥ वाजीयां तूर नीसाण घूरयां घणां, अमरने मावडे ख्याति लीधी ॥ मा० ॥ ॥१५॥ लाज वाधी घणी जगत धूंबड तणी, बोल अ रियां तणो दूउं माठो॥ए थइ ढाल जिनहर्ष उंगणीश मी, नासतां शिर चड्यो कृष्ण चाठो ॥ मा० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ व्यंतर तास सखाइयो, कुमर लह्यो जसवाद ॥ अचरिज सहुनें ऊपनो, एकण कह्यो उन्माद ॥१॥ धूंबड तो एकलो हुतो,कटक थयो परगट्ट ॥ दीठो न हिं केणे आवतो, जातो नहीं पण दीठ ॥२॥ एतो कोइक देवता, के विद्याधर कोइ॥ के कोइक योगींद्र छे, जांखा नरपति होइ ॥३॥ राज देशना मूआ घ णा, एनो न मूउं कोइ ॥ अमरसेन मनमां इस्यो, खेद करंतो जोइ ॥४॥ ततक्षण कुमर कायाथकी, चर्म उताख्यो जाम॥ जयसेन रूप प्रगट थयुं, हर्ष्या सहुको ताम ॥५॥ ए विद्या शीख्यो किहां, अहो कुमर वडवीर॥ संग्राम कीधो एटलो, तुं तो साहस धीर ॥६॥ लागो पाये तातनें, खमजो अविनय मु ज्ञ ॥ आलिंगन देइ पूठीयो, मली विद्या किहां तुज ॥ ७ ॥ कह्युं वृत्तांत सहु मूलथी, खुसी थयो सुणी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तात॥हवे समय विवाहनो,आव्यो दिन विख्यात॥७॥

॥ ढाल वीशमी ॥ रघुनाथ मले मो मन वसीया ॥ ए देशी ॥

॥ जयसेनकुमर गुहिर गाढो,केसरीया करी हुउं ला डो ॥ ए आंकणी ॥ बलिजद्रराये उत्सव मांड्यो, श णगास्युं पुर सघली जांतें ॥ कुमरी जाग्य पुण्याइ म हारी, वर मलीयो पूरुं मन जांते ॥ ज० ॥ १ ॥ मं रूप रचियो सुर जुवन सरिखो, देखतां थाय उछरंग॥ गयवर चडी वर कुमर पधास्यो, तोरण वांदण जाय निःसंग ॥ ज० ॥२॥ गोखें गोखें जोवे गोरी, गली यें नर जोवे वरराज ॥ पुरमांहे गहमह हुई रह्यो, घू रे नगारां नोबत साज ॥ ज० ॥३॥ रूपें देवकुमर अवतरीयो,आजरणे करी दीपे अंग॥वाघो पहेरी अवल कसबीनो, सूरज ज्योति झगमगे अजंग ॥ ॥ ज० ॥४॥ सासु आवी पुंखीयो वरने, सघलाही कीधा आरंज ॥ लाडो देखी मन हरखी लाडी, वर सुरवर सरिखो हुं रंज ॥ च० ॥ ५ ॥ पूरवजवनो नेह नगीनो, बानो न रहे व्यापे मोह ॥ खेंचीले मन हियडे पेसी, आकर्षी जेम चमक लोह ॥ज०॥ ॥६॥ शोले तन शणगार बनाया, सुर कन्या सरखी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जेह ॥ आवी चोरीमांहे बेठी, वर पण बेठो सुंदर देह ॥ ज० ॥ ७ ॥ गावे धवल मंगल मली गोरी, ब्राह्मण करे वेद उच्चार ॥ फेऱ्या पावक वेदी दोला, वर कन्यानें फेरा चार ॥ ज० ॥८ ॥ हाथ मेलाव्या वर कन्यानां, कारण सहु कीधां लौकिक ॥ चारे मंगल वरत्या चोरी, लाडो लाडी रह्या नजीक ॥ ज० ॥ ॥ ए ॥ कर मेलावण रायें दीधो, हय गय कंचन अरु राज ॥ मांहो मांहे रह्यो रस जाजो, परणी ऊठ्या सीधां काज ॥ ज० ॥ १० ॥ राजवीयांनां मन रीजाणां, परिगल मीठा करी पकान्न ॥ जली युक्तिशुं जान जिमाइ, देइ यान घणुं सन्मान ॥ ज० ॥ ११ ॥ जानी सघलाही गहगह्या, राजवीयांनें दीधी शीख ॥ खुशीथई सहुको घर चाल्यां, वेवाही बे रह्या सरीख ॥ ॥१२॥ सासु देखी जमाइ हरखे, करे जक्ति दिन दिन नवि रीति ॥ढाल थई वीशमी ए पूरी, गाइ जिनहर्ष सोहेलें गीत ॥ ज० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ३९२ ॥

॥ दोहा ॥

॥अमरसेन राजा जणी,कहे बलिजऽ नृप एम ॥ इहां रहो पिन केटला, तुमशुं छे बहुप्रेम ॥१॥ अम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नें रह्यां न पूरवे, सूनो केडे राज ॥ शूनुं राज न मू कीयें, कयारेक विणसे काज ॥ २ ॥ राये घणुं कहे वरावियुं, पण न रहे अमरसेन ॥ सातेहि जो नवि रहो, तो राखो जयसेन ॥३॥ आग्रह करी राख्यो कुमर, सासु ससरे ताम ॥ जगतावि बोलावीयो, पू री मननी हाम ॥ ४ ॥ वाली थाये दीकरी, वर प ण वालो तास ॥ सहु सो सो वानां करे, कण मेले नहिं पास ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ कृषन जिनेसर प्रीतम ॥ माहरो रे ॥ ए देशी ॥

॥केली करे कुमरी रे जयसेन कुमरशुं रे, दिन दिन नवलो रंग ॥ दिन दिन वधती रे प्रीति परस्परें रे, दिन दिन अति उछरंग ॥ के० ॥ १॥ कुमरी जाणो रे वर पाम्यो नलो रे, पूरव पुण्य संयोग ॥ नृपसुत मोह्यो रे कुमरी रूपशुं रे, जोगवे सुख संजोग ॥के०॥ ॥२॥रमे केइ वारें रे वाडी बागमां रे, वापी नीर मझार ॥ कुंकु जरावे रे केशर नीरशुं रे, झोले मली निजना र ॥ के० ॥ ३ ॥ मीठे बोले रे वाणी सीमंतिनी रे, रंजे प्रीतम चित्त ॥ कण एक पण रे दूर रहे नही रे, पारेवा जेम प्रीत ॥ के० ॥ ४ ॥ एकदिन पूछे रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वसर पामीनें रे, जयसेना घर नारी ॥ मननी चिंते रे प्रतिज्ञा दोहेली रे, केणीपरें पूरी चार ॥ के० ॥५॥ सहु तिणे कह्युं रे वृत्तांत ते वनतणुं रे, पूरव नवनी वात ॥ तेतो में जाणी रे बालपणाथकी रे, सांनली कहेतां तात ॥ के० ॥६॥ एहवुं सुणीनें रे चिंते कामिनी रे, विधि सन्मुख जब होय ॥ चिंतित त्यारें रे सहु आवी मले रे, कारण अवर न कोय ॥कु०॥७॥ इम सहु इछा रे पूरे मन तणी रे, सुरनी परें सुकुमाल ॥ काल गमावे रे राग रंगमां सदा रे, बंधाणां प्रेमजाल ॥ के०॥ ॥८॥ सुख लपटाणां रे जातां जाणे न हीं रे,रात दिवस सुखमांहि ॥ निज चतुराईयें रे प्रीतम वश कियो रे,मनमां सदा उत्साहि ॥ के० ॥९॥ एकदिन नांखे रे कुमर राजा नणी रे, अमें हवे चालणहार ॥ अनुमति आपो रे अमने करी मया रे, म लगावो हवे वार ॥ के० ॥१०॥ दिवस घणेरा रे इहां रहेतां थया रे, हवे जईयें निजगेह ॥ मिलणो माहरे रे मातपिता नणी रे, जाग्यो बहु परें नेह ॥ के० ॥ ११ ॥ माय बाप महारी रे वाट जोतां हशे रे, तेहनी पूरुं खंत ॥ ढाल थई रे ए एकवीशमी रे, थाये जिनहर्ष निचिंत ॥ के० ॥ १२ ॥

Jain Educationa International ४ For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥सांजली वचन कुमारनां,हैयुं जराएुं ताम ॥ बलि जद्र बोली नवि शके,संजारी गुणग्राम ॥१॥प्रीति ज माइ ताहरी, हियडे बेठी आइ ॥ किमही नीसरशे नही, एतो साल समाइ ॥ २ ॥ मन ऊपाज्युं इहां थकी,अमने करी नीराश ॥ जाशो केम करशुं अमें, खारा होय आवास ॥३॥ अमनें वीसरशो नही, ख री लगाइ प्रीत ॥ जोजन करवा अवसरें, वाला आ वे चित्त ॥४॥ तुमने शुं कहीयें घणुं, कहेवानो व्य वहार॥सीधावोने सिद्ध करो,धरजो प्रीति अपार॥५॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ आज निहेजो रे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥

॥ करे सजाइ रे कुमर ते चालवा, बलिजद्र राजा रे ताम ॥ हय गय सेजवाला रथ पालखी, किंकर करवा रे काम ॥ करे० ॥ १ ॥ आप्या घरेणां रे वाघा न व नवा, कन्यानें पण सार ॥ बहुपरें आप्या रे वेश घणा घणा, आप्या सहु शणगार ॥ करे० ॥ २ ॥ कीयो जुहार जमाईयें जइ करी, सासुने तेणी वार ॥ दीधी फरी आशीष सोहामणी, नयणे आंसु धार ॥ ॥करे०॥३॥ मेलो देजो रे वहेला आवीने, तुमें बो जी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

व समान॥ क्यारें अमने रे वीसरशो नहीं, जेम चू
ख्यानें रे धान्य ॥ करे० ॥ ४ ॥ अमने पण अवस
रें संभारजो, लखजो कागल पत्र ॥ ॥ सेंगुं साथें रे
कुशल कहावजो, कुशलें पहोंचो रे तत्र ॥ करे० ॥
५ ॥ हियडे जीडी रे बेटीने कहे, करजे सहुनी रे
लाज ॥ विनय करजे सासु ससरा तणो, न करे कांइ
अकाज ॥ करे० ॥ ६ ॥ कुलवट रीतें चालीजें दीक
री, न करे मध्यम संग ॥ उत्तमनी संगति तुं आदरे,
पियुशुं राखे रे रंग ॥ करे० ॥ ७ ॥ अधिको ऊंचो रे जो
प्रीतम कहे, तोपण म करे रे रीश॥ किणही वातें रे
नाह म दूहवे, धरजे आणा रे शीश ॥ करे० ॥ ८ ॥
मन वच काया रे शील म खंमजे, शोभा शील शरी
र ॥ आवे तेहने रे मागे ते आपजे, परनर गणजे रे
वीर ॥ करे० ॥ ए ॥ तुंकारे किणने म बोलावजे, बो
लावे जीकार ॥ शोभा लेजे रे सहुमांहे घणी, चुंइं जे
म धरजे रे चार ॥ करे० ॥ १० ॥ राजलीलासुख सं
पत्ति पामीनें,म करे मन अहंकार॥धर्मध्यान सूधो मन
आदरे, करजे दुःखित सार ॥ क० ॥ ११ ॥ तुज घ
रें आवे साधु महाव्रती, देजे अढलक दान ॥ लाहो
लेजे रे पामी आथनो,म करीश देती रे मान ॥क०॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १२ ॥ शीख किसी दीजें सुपुरुषनें, तुं छे चतुर सुजाण ॥ पूरी ढाल थइ बावीशमी, सुणो जिनहर्ष सुजाण ॥ क० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ४१५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शीख इसी सुणी रायनी, मल्लि कुमरी माय ताय ॥ चाली पीयुशुं सासरे, साथें सैन्य समुदाय ॥ १ ॥ चर्मरतन मृन्मय तुरी, लेई कुमर सुजाण ॥ तिहांथी चाल्यो हित करी, करतो अखंड प्रयाण ॥ २ ॥ अनुक्रमें धारापुरवरें, आव्यो जाणी राय ॥ पेसारो कीधो घणो, नम्या तातना पाय ॥ ३ ॥ चरण नम्यां माता तणां, वहू सासुनें पाय ॥ लागी विनय विवेकशुं, आवी सहुने दाय ॥४॥ वहूयें सहुने मोहीयां, जाणे मोहनवेश ॥ देखीनें लोयण ठरे, चाले गजगति गेल ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ निर्जय नगर सोहामणुं ॥ वणजारा रे ॥ ए देशी ॥

॥ अमरसेन अमरेशशुं पुण्य जोवो रे ॥ पाले राज्य अखंड हो पुण्य जोवो रे ॥ तेज वधे दिनदिन घणो पु० ॥ जरे भूमियां दंड हो पु०॥१ ॥ मांहोमांहे हित घणुं पु० ॥ पिता पुत्र एक जीव हो पु० ॥ ताल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

[illegible] लोपे नहिं पु० ॥ वाह्यो विनय अतीव हो पु० ॥ २ ॥ त्रण्य वर्ग साधे सदा पु० ॥ जाणे अधि को धर्म हो पु० ॥ अर्थ काम धर्मविण नहिं पु० ॥ धर्मथकी शिवशर्म हो पु०॥३॥ जीवदया पाले सहु पु० ॥ न करे जीवनी घात हो पु० ॥ मृषा वचन बोले नही पु०॥ अदत्त तणी नही वात हो पु० ॥४॥ परदारा सेवे नही पु०॥ करे सहुने उपकार हो पु०॥ अन्याय मारग टालीयो पु० ॥ दीजें शत्रुकार हो पु० ॥ ५ ॥ उत्तम आचारें चले पु० ॥ परजाने सुख कार हो पु० ॥ पाप पुण्य जाणे सहु पु० ॥ जीवा जीव विचार हो पु० ॥६॥ निशिभोजन न करे कदा पु० ॥ जाणी दोष अपार हो पु० ॥ सात क्षेत्रें धन वावरे पु० ॥ पण न करे अहंकार हो पु० ॥ ७ ॥ कुलवट रीत न चातरे पु०॥ कूड कपट परिहार हो पु०॥ पाले आज्ञा जिनतणी पु०॥ भरे सुकृत भंडार हो पु० ॥ ८ ॥ कुमर अधिक थयो भावथी पु० ॥ धर्मी धर्मविचार हो पु०॥ किणहीनें दूहवे नही पु०॥ क्षत्री कुल शणगार हो पु० ॥९॥ पुण्यपसायें भोगवे पु०॥ विषय तणा सुखभोग हो पु०॥ तीव्र परिणाम न जेहना पु०॥ जाणे दुःख संयोग हो पु० ॥ १० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कुमर राय इणी परें रहे पु०॥ सुखमांहे निशि दीस हो पु०॥ कहे जिनहर्ष पूरी थइ पु०॥ ढाल एह त्रेवीश हो पु० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ ४३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर उद्यानमां, समवसर्या ऋषि राय॥ सूरि गुणाकर नूरि गुणा, पाले जे षट्काय ॥१॥ ई र्या भाषा एषणा, पारिठावणीयादाण ॥ पांच समिति पाले सदा, त्रण गुप्ति सुपहाण ॥ २ ॥ बारे भेदें तप करे, सहे परीसह अंग॥ जीत्या चार कषाय जिणे, धारे रथ शीलंग ॥३॥ पंच प्रमाद करे नही, जे दुर्ग ति दातार ॥ चार संसार वधारणा,क्रोधादिक परिहा र ॥ ४ ॥ गुण छत्रीश बिराजता, पाले पंचाचार ॥ भविक जीवनें तारवा, मुनिवर करे विहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ कर्मपरीक्षा करण कु मर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ सद्गुरु आव्या रे राय सुणी करी रे, हरख्यो चित्त मझार॥ सैन्य संघातें रे वांदण चाल्लीयो रे, सा थें पुर नर नार ॥ स० ॥१॥ विधिशुं राजा रे गुरु चरणे नम्यो रे, धर्माशीष गुरु दीध ॥ विनय करीनें रे बेठा आगलें रे, धर्मोपदेश ध्वनि कीध ॥स०॥२॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नवियण जावो रे मनमांहे तुमें रे,एह अनित्य शरी
र ॥ वार न लागे रे एहने विणसतां रे, जेम पंपोटो
नीर ॥ स० ॥ ३ ॥ इंद्रसनाथी रे आव्या देवता रे,
जोवा रूप अपार ॥ एक पलक रे मांहे विणसी गयो
रे, चक्री सनतकुमार ॥ स० ॥४॥ रुद्धि छोडीने रे
राजन नीसर्यो रे,न करे काया सार ॥ एहने पोषी रे
न थइ आपणी रे, दीधो मोह उतार ॥ स० ॥५॥
तेणे ए काया रे जाणी अशासती रे, न धर्यो मोह
लगार ॥ तेम तुमें जाणो रे काया कारमी रे, पडतां
न लागे वार ॥ स० ॥६॥ विनव विचारो रे चपला
सारिखो रे, राख्यो न रहे एह ॥ यतन करंतां रे जा
ये हाथथी रे, जेम निगुणानो रे नेह ॥ स० ॥ ७ ॥
नेली कीधी रे कपट करि घणां रे, करि करी बहु आ
रंन॥राय लेई जाय रे चोर पलेवणुं रे, जोवो एह अ
चंन ॥ स० ॥८॥ दिन दिन आवे रे नेडो आऊखो
रे, गणियामांहे घटंत ॥ एकदिन आवी रे जम लइ
जायशे रे, राखी न कोइ शकंत ॥ स० ॥९॥ मृगप
ति जाये रे जेम मृगनें ग्रही रे, तेम लेइजाशे ए का
ल ॥ मात पितादि रे राखी नवि शके रे, साथें न
को अंतकाल ॥ स० ॥१०॥ एक दिन मरवुं रे छे स

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हुनें सही रे, कोण राजा कोण रंक ॥ एहवुं जाणी रे धर्मसंग्रह करो रे,जिहां लगें दूर आतंक ॥स०॥ ॥ ११ ॥ जरायें न कीधी रे काया जाजरी रे, तिहां लगें फोरवे प्राण॥जरा आवशे रे ज्यारें पापिणी रे, घटशे प्राण विन्नाण ॥ स० ॥ १२ ॥ जरा धूतारी रे एह विध्वंसिणी रे, तप जप किरिया न थाय ॥ पांचे इंद्री रे बलहीणां करे रे, लडथडशे निज काय ॥ ॥ स० ॥ १३॥ धर्म करो रे अवसर पामीने रे, आलस नाणो अंग॥ अवसर चूको रे फरि नहीं आवशे रे, जेम नदीयां जल संग ॥ स० ॥१४॥ धर्म करो रे जेम भवजल तरो रे,धर्मथी संपति थाय ॥ धर्मथी पूगे रे आशा मन तणी रे,धर्में दुरित पलाय ॥ स० ॥ १५ ॥ धर्में काया रे निर्मल पामीयें रे, थर्में जस जयवाद॥ढाल चोवीशमी धर्म करो भवि रे, त्यजी जिनहर्ष प्रमाद ॥ स० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीधी इणीपरें देशना,धर्में रंगाणी देह॥ अमर सेन नृप चिंतवे, धन्य धन्य मुनिवर एह ॥१॥ ए मुनिवर तारण तरण,धर्म तणा दातार॥ मित्र एह निःस्वारथी, करे सहुने उपकार ॥ २ ॥ धर्म सुथानुं फ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ल किस्युं, जो तजीयें न आरंज ॥ गुरुवाणी न रहे हिये, जेम जल काचे कुंज ॥ ३ ॥ गुरु वाणी सफ ली करुं, लहुं हवे संयमजार ॥ जो सांजली नवि आ दरुं, तो थाये लीपण ठार ॥ ४ ॥ राजकाज कीधां घ णां, कीधां पाप अपार ॥ पाप पखालुं आपणां, की धो एह विचार ॥ ५ ॥ आचारजनें एम कहे, अमरसे न नरनाथ ॥ राज्य देइ निज पुत्रनें, व्रत लेशुं तुम पास ॥ ६ ॥ इम करी मंदिर आवियो, कुमर जणी देइ राज ॥ उत्सवशुं व्रत आदस्यो, अमरसेन शिव काज॥७॥तप जप किरिया मुनिधरम,पाली निरतिचार ॥ अंतें अनशन आदरी, पहोता मुक्तिमझार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ जरत नृप जावशुं ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजयसेन राजा हवे ए, न्यायें पाले राज ॥ अन्याय दूरें तजे ए, वाधी जगमां लाज ॥ १ ॥ सदा जय धर्मथी ए ॥ धर्मैं लील विलास, धर्मथी सुख हुवे ए, धर्मथी सफली आश ॥ सदा० ॥ २ ॥ जय सेना पटराणिणी ए, वाली जीव समान ॥ सदा सुख जोगवे ए, रागरंग गुणगान ॥ सदा० ॥ ३ ॥ सूत्र तांतणनी पालखी ए, बेसी रमे पुरमांहे ॥ बहु अच रज लहे ए, दिन दिन अधिक उछाहे ॥ स० ॥ ४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रूप कस्युं अदृश हुवे ए, धर्म तणे परन्नाव ॥ माटीनें तुरगें चडे ए, नाम थयो सिद्धराव ॥ स० ॥ ५ ॥ किणहीनें नमता नही ए, तेपण लाग्या पाय ॥ न्नरे दंरू रायनें ए, डुर्द्धर पुण्य पसाय ॥ स० ॥ ६ ॥ कुंथु जिणंद पसाउले ए, पाम्या राजन्नंमार ॥ रतनमय तेहनुं ए, बिंब न्नराव्युं सार ॥ स० ॥ ७ ॥ दयाधर्म पाले सदा ए, पाले जिनवर आण ॥ नमे मुनिन्नाव शुं ए, पवित्र करे निज प्राण ॥ स० ॥ ७ ॥ इम गृह धर्म पाली करी ए, अणसण लेइ अंत ॥ वैमानिक सुर थयो ए, पुण्यप्रन्नाव अचिंत ॥ स० ॥ ए ॥ रात्रि न्नोजन परिहरो ए, सांन्नली गुरु उपदेश ॥ जाणी दोष बहुपरें ए, पामो सुख सुविशेष ॥ स० ॥ १० ॥ सांन्नली रास सोहामणो ए, धरजो हृदय मऊार ॥ आतम हित जेम हुवे ए, तेम करजो नर नार ॥ स० ॥ ११ ॥ रात्रिन्नोजननी आखडी ए, करजो दोष विचार ॥ अमरसेन जयसेन परें ए, लेहेशो सुख अपार ॥ स० ॥ १२ ॥ निधि पांमव न्नद्र संवत्सरें ए, वदि आषाढ जगीश ॥ पूरण थइ चौपइ ए, पडवा केरे दीस ॥ स० ॥ १३ ॥ श्रीखडतरगछ राजीयो ए, श्रीजिनचंद सूरिंद ॥ रतनसूरि पाटवी ए, दीठां होये

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आनंद ॥ स० ॥ १४ ॥ शांतिहर्ष वाचक तणो ए, कहे जिनहर्ष मुणिंद ॥ वामेय पसाऊले ए, कीर्त्ति कमला कंद ॥ स० ॥ १५ ॥ पाटणमांहे में रच्यो ए, रात्रिजोजन रास ॥ पच्चीश ढालें करी ए, सुणतां शीलविलास ॥ स० ॥ १६ ॥ सर्वगाथा ॥ ४७७ ॥ इतिश्री रात्रिजोजनत्यागफलमाहात्म्ये अमरसेन जयसेन नृपरासः सपूर्णः ॥ शुजमस्तु ॥

॥ इति श्री रात्रिजोजन त्याग फल माहात्म्यरासः समाप्तः ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दुर्जन विषे दोहा ॥

॥ पाणी घणुं विलोइयें, कर चोपड्या न हुंति ॥ निर्गुण जण उपदेशडा, निप्फल हुंति न जंति ॥१॥ दुजाण विखहर सदृश है, लेत औरके प्राण ॥ आप उदर न जरे तनक, दुष्ट सहाव प्रमाण ॥२॥ दुजाण चुआ समान है, करे अमूलक चीर ॥ दुख जगे नहिं आपणी, करत ओरकूं पीर ॥ ३ ॥ दुजाण अग्नि सहाव है, जारत अगणित वस्त्र ॥ आप तृपत होवै नहीं, नाश करत जग सत्र ॥ ४ ॥ दुजाण अहिथें नितुर है,अहि डंके इक वार ॥ दुजाण काटे वणथें, दीह रयण बहु वार ॥ ५ ॥ दुजाणजी जगमें जले, इनको ए उपयोग ॥ दुजाण विण सजाण दुको, उलखहीं किस लोग ॥ ६ ॥ दुजाण किरतारें किये, पर दूखणहि दिखाइ ॥ वे सुणि जन चेती करी, सीखे आप सदाइ ॥ ७ ॥ दुजाण संधी गोठडी, करकें संधी जाय ॥ पाणी जेम विलोवियां, मरकण नक्को थाय ॥ ८ ॥ दुजाण जण बब्बूल वण, जो सींचो अमिएण ॥ तोहे कांटा वींधणां, जातीतणे गुणेण ॥ ए ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ सोरठो ॥

॥ जेवां पाकां बोर, तेवां मन कुर्जन तणां ॥ जीतर कठिन कठोर, बाहिर तो राता रहे ॥ १० ॥

॥ जुवानी विषे दोहा ॥

॥ जुवानी है दिन चारकी, ज्यूं पतंगको रंग ॥ सहजमांहि उमि जायगो, ताको कहा उमंग ॥ १ ॥ जुवानीमें फूल्यो फिरत, अमरहि जानत आप ॥ खबर न पलकी परत है, शिरपें यमकी थाप ॥ २ ॥ जुवानि केसू रंगवत, पल छिन सुंदर दीख ॥ रहत नही बहु काल यह, देखहु जगकी सीख ॥ ३ ॥ जुवानिमें जी मरतहै, बहुत जगतमें लोक ॥ ताको सो अजिमान क्या, सबही है यह फोक ॥ ४ ॥ बालपनो ज्यूं हुति गयो, त्यूं जुवानीहु जाइ ॥ जरा आवहि तब कछु, शुद्ध कृत होवै नांहिं ॥५॥ जुवानीको मद क्या करियें, नहिं रहै बहु काल ॥ नाशवंतको गर्व क्या, व्है तो मार निकाल॥६॥जुवानिमें कछु रोग व्है, तो क्या आवै काम ॥ नांहि प्रिय सुख भोग कछु, विषवत लगैं तमाम ॥ ७ ॥ जुवानिमें माया मिलै, तो पुमान छकि जात ॥ जावत नहिं यह ना रहै, लगही कालकी लात ॥ ८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ प्रीतिविषे दोहा ॥

॥ प्रीतज एसी कीजियें, ज्यूं जल मत्स्य कराय ॥ खिणेक जलथी बीछडे, तडफडीने मरि जाय ॥१॥ मने साधजो प्रीतडी, नथि मिलवानो संच ॥ सरज्या विण नवि संपजे, करियें कोडि प्रपंच ॥ २॥ नयणां केरी प्रीतडी, जो करि जाणे सोइ ॥ नयणे जे रस ऊपजे, ते रस सेज न होइ ॥३॥ प्रीति जली पंखेरुआं, जे जोडिनें मिलंत ॥ पंख विहूणां माणसां, अलगाथी विलवंत ॥ ४ ॥ नयण पदारथ नयण रस, नयणें नयण मिलंत ॥ अणजाण्याशुं प्रीतडी, पहेलां नयण करंत ॥ ५ ॥ कीजें प्रीति सुमाणसां, जे जाणे गुण नेअ ॥ सूखड पछरशुं घसी, तोह न अप्पे छेअ ॥६॥ प्रीति रीति कछु और है, मुखतें कही न जाय ॥ मिशरी खाई मूक सो, कहै कहा दरसाय ॥ ७ ॥ प्रीति सर्वसें राखियें, करहु न कहुं बिगार ॥ जैसें सहाव लींब रस, मिलत सकलमें धार ॥ ८ ॥ प्रीति बहुत प्रकारकी, तिनमें गहियें शुद्ध ॥ काज न बिगरे जाहितें, कोइ कहै न अशुद्ध ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ शीखामणना बोलो प्रारंजः ॥

१ इष्टदेवनुं ध्यान मनमां धरवुं. २ देशना धणीनी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शंका राखवी. ३ जेना वासमां रहीयें, तेनो घणो यत्न करवो. ४ जेनुं लूण खाइयें, तेनी साथें हरामखोरी न करवी. ५ उन्नडक बेसीने जमवुं नही अने जमीने तुरत जाजुं पाणी पीवुं नहिं. ६ उन्नां उन्नां पाणी पीवुं नहिं.७ निर्दय साथें व्यापार करवो नहिं, ८ पोता ना छोरुने शिखामण आपवी, नजरमां राखवो, लाडको करी नाखवो नहिं. ए पाडोशी साथें लडाइ करवी नहिं. १० जेना वासमां रहीयें, तेनी साथें वाद करवो नहिं. ११ विना कामें जुतुं बोलवुं नहिं. १२ खोटी साक्षी नरवी नहिं. १३ पोतानी इंद्रियो वश राखवी. १४ परस्त्रीसाथें प्रीति न करवी. १५ स्त्री ने भेदनी वात कही देवी नहिं. १६ नीच जातिने घरमां राखवो नहिं. १७ ब्राह्मणनो विश्वास करवो नहिं.१८ चौपगां जनावर घणां राखवां नहिं. १ए का म सरतां खेती करवी नहिं. २० दयाधर्म अत्यंत आदरवो. २१ दुःखीया जीवो उपर करुणा करवी, तेने यथाशक्ति आश्रय आपवो. २२ रूपवंत स्त्रीसा थें विशेष वार्त्तालाप करवो नहिं. २३ प्रन्नातें निद्रा करवी नहिं. २४ कोइनुं मर्म कहेवुं नहिं. २५ सां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जे मारगमां चालवुं नहिं. २६ महोटा माणासनी मश्करी करवी नहिं. २७ अजाण्या साथें जावुं न हिं. २८ रोष उपने थके तुरत कोइ काम करवुं नहिं, थोडा विलंबें करवुं. २९ प्रीति करीयें तो त्रो डवी नहिं. ३० जे काम करीयें ते शोच विचार क री करवुं. ३१ सामो कोइ रीश करी बोलतो होय तो पण पोतें क्षमा करवी. ३२ निर्बल माणसने नि र्बल जाणवो नहिं. ३३ जे पोताना प्रारब्धें वधे, ते नी साथें अदेखाइ करवी नहिं. ३४ पोतानो धर्म छो डवो नहिं. ३५ अफीण कोइने खवरावबुं नहिं. ३६ ए कलायें मारगें चालवुं नहिं. ३७ जेथकी जीवहिंसा थाय तेवुं काम करवुं नहिं. ३८ दान करीने पछें प श्चात्ताप करवो नहिं. ३९ धातुरवादमां धन खोवुं नहिं. ४० धातुरवादीनो विश्वास न करवो. ४१ कु माणसनो संग करवो नहिं. ४२ वगरकामें कोइना घरमां पेसवुं नहिं. ४३ कोइ अमलदारनो विश्वास समजीने करवो. ४४ पोतें जूठा पडीयें, ते काम न करवुं. ४५ राजाना घरनी वात लोकोने कहेवी नहिं. ४६ धर्म करवामां विलंब करवो नहिं.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org